ज़िया-उल-हक़

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

मसीह मौऊद-व-महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

اَكَذَّبْتُمْ بِاٰيٰتِيْ وَلَمْ تُحِيْطُوْا بِهَا عِلْمًا
(सूरह अन्नमल - 85)

ज़ियाउल हक़

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक : ज़ियाउल हक़
Name of book : Ziaul Haq
लेखक : हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम
Writer : Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani
Masih Mau'ud Alaihissalam
अनुवादक : डा अन्सार अहमद पी.एच.डी आनर्स इन अरबिक
Translator : Dr Ansar Ahmad, Ph.D, Hons in Arabic
टाइपिंग, सैटिंग : महवश नाज़
Typing Setting : Mahwash Naaz
संस्करण तथा वर्ष : प्रथम संस्करण (हिन्दी) जुलाई 2018 ई०
Edition. Year : 1st Edition (Hindi) July 2018
संख्या, Quantity : 1000
प्रकाशक : नज़ारत नश्र-व-इशाअत,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
Publisher : Nazarat Nashr-o-Isha'at,
Qadian, 143516
Distt. Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Printed at : Fazl-e-Umar Printing Press,
Qadian, 143516
Distt. Gurdaspur (Punjab)

पुस्तक परिचय

ज़ियाउलहक़

मिस्टर अब्दुल्लाह आथम ईसाई मुनाज़िर से संबंधित मुबाहस: "जंग मुक़द्दस" के समापन पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह भविष्यवाणी की थी कि वह पन्द्रह माह के समय में हाविय: में गिराया जाएगा बशर्ते कि सच्चाई की ओर रुजू न करे। जब भविष्यवाणी की मीआद पन्द्रह माह गुज़र गई और आथम न मरा और अल्लाह तआला ने भविष्यवाणी के अनुसार सच की ओर लौटने (रुजू) के कारण उसे मुहलत प्रदान की तो ईसाइयों ने इस पर बड़ी खुशियाँ मनाईं और उसे ईसाइयत की विजय समझ कर 6 दिसम्बर 1894 ई. को अमृतसर में आथम का जुलूस भी निकाला। यह मुकाबला वास्तव में इस्लाम और ईसाइयत का था जैसा कि स्वयं मसीही अखबार नूर अफ़्शां ने भी लिखा-

"मिर्ज़ा साहिब ने मसीहियों के साथ मुबाहस: अपने मुल्हम और मसील-ए-मसीह होने के बारे में नहीं किया अपितु मुहम्मदियत को सच्चा धर्म और क़ुर्आन को अल्लाह की किताब सिद्ध करने पर मसीहियत का खण्डन करने के लिए किया था और वह भविष्यवाणी मुबाहस: के समापन पर उन्होंने मुहम्मदियत ही के धर्म सच्चा और ख़ुदा की ओर होने के सबूत में की थी।"

(नूर अफ़्शां 20 दिसम्बर 1894 ई.)

परन्तु इसके बावजूद कुछ निर्लज्ज मुल्लाओं और उनके अनुयायियों ने ईसाइयों के साथ मिलकर कोलाहल और उपहास में

बराबर का भाग लिया और भविष्यवाणी के पूरा न होने का शोर मचाया और उस पर ऐतराज़ किए। गन्दे और गालियों से भरे दिल दुखाने वाले विज्ञापन निकाले और अत्यधिक गालियों से काम लिया। तब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इन काफ़िर कहने वाले मुल्लाओं को जैसे का तैसा उत्तर दिया और उनकी इस्लाम दुश्मनी का इन शब्दों में वर्णन किया-

"कुछ नाम के मुसलमान जिन्हें आधा ईसाई कहना चाहिए इस बात पर बहुत प्रसन्न हुए कि अब्दुल्लाह आथम पन्द्रह माह तक नहीं मर सका और ख़ुशी के मारे सब्र न कर सके। अन्त में विज्ञापन निकाले और अपनी आदतानुसार गंद बका और उस व्यक्तिगत कृपणता के कारण जो मेरे साथ थी इस्लाम पर भी आक्रमण किया, क्योंकि मेरे मुबाहसे इस्लाम के समर्थन में थे न कि मेरे मसीह मौऊद होने की बहस में। अन्ततः मैं उनके विचार में काफ़िर था या शैतान था या दज्जाल था परन्तु बहस तो जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्चाई और पवित्र क़ुर्आन के बारे में थी।"

(रूहानी ख़जायन जिल्द-9, पृष्ठ-24)

अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पन्द्रह माह की मीआद गुज़रते ही 5 सितम्बर 1894 ई. को अन्वारुल इस्लाम पुस्तक लिखी और मई 1895 ई. में इसी विषय पर पुस्तक ज़ियाउल हक़ लिखी जिनमें इस भविष्यवाणी के पूरा होने का विस्तारपूर्वक वर्णन किया और लिखा-

"कि ख़ुदा तआला के इल्हाम ने मुझे जता दिया कि डिप्टी

अब्दुल्लाह आथम ने इस्लाम की श्रेष्ठता और उसके रोब को स्वीकार करके सच की ओर रुजू करने का कुछ भाग ले लिया जिस भाग ने उसके मौत के वादे और पूर्ण तौर के हाविय: में विलम्ब डाल दिया और हाविय: में तो गिरा परन्तु उस बड़े हाविय: से थोड़े दिनों के लिए बच गया जिसका नाम मृत्यु है।"

(रूहानी खज़ायन जिल्द-9 पृष्ठ-2)

और आथम के रुजू से संबंधित जो इल्हाम हुए थे वे इस पुस्तक में लिखे और शक्तिशाली क़रीनों से आथम के सच की ओर रुजू को सिद्ध किया। फिर आप ने निरन्तर चार विज्ञापन प्रकाशित किए जिनमें आपने इस शर्त पर कि यदि आथम निम्नलिखित शब्दों में क़सम खा जाए तो उसे एक हज़ार रुपया दिया जाएगा फिर दूसरे विज्ञापन में इस इनामी रक़म को दो हज़ार और तीसरे विज्ञापन में तीन हज़ार और चौथे विज्ञापन में चार हज़ार रुपए कर दिया और क़सम के शब्द ये थे कि-

"भविष्यवाणी के दिनों में मैंने इस्लाम की ओर कदापि रुजू नहीं किया और इस्लाम की श्रेष्ठता मेरे दिल पर कदापि प्रभावी नहीं हुई और यदि मैं झूठ कहता हूं तो हे शक्तिमान ख़ुदा एक वर्ष तक मुझे मौत देकर मेरा झूठ लोगों पर प्रकट कर।"

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-9 पृष्ठ-312)

और फ़रमाया-

"अब यदि आथम साहिब क़सम खा लें तो एक वर्ष का वादा निश्चित और अटल है जिसके साथ कोई भी शर्त नहीं और अटल तक़्दीर है और यदि क़सम न खाएं तो फिर भी ख़ुदा तआला ऐसे

अपराधी को दण्ड के बिना नहीं छोड़ेगा जिस ने सच को छुपा कर दुनिया को धोखा देना चाहा।"

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-9 पृष्ठ-114)

इसके अतिरिक्त आप ने यह भी लिखा-

"यदि क़सम की तिथि से एक वर्ष तक जीवित बचा रहा तो वह रुपया उसका होगा और फिर इसके बाद ये समस्त क़ौमें मुझे जो दण्ड देना चाहें दें। यदि मुझ को तलवार से टुकड़े-टुकड़े करें तो मैं बहाना नहीं करूंगा और यदि संसार के दण्डों में से मुझे वह दण्ड दें जो कठोरतम दण्ड है तो मैं इन्कार नहीं करूंगा और स्वयं मेरे लिए इससे अधिक कोई बदनामी नहीं होगी कि मैं उनकी क़सम के बाद जिस का आधार मेरे ही इल्हाम पर है झूठा निकलूँ।"

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-9 पृष्ठ-317)

यदि आथम ने क़सम खाने से इन्कार का मार्ग ग्रहण किया और क़सम न खाई जिससे उस का झूठा होना और अल्लाह तआला के इल्हाम की सच्चाई कि आथम ने सच की ओर रुजू किया और इसी कारण से वह मौत के हाविय: से बच गया दुनिया पर प्रकट हो गई। इस प्रकार से आथम से संबंधित भविष्यवाणी बड़ी चमक-दमक से पूरी हुई। इस भविष्यवाणी को विस्तारपूर्वक हम रूहानी ख़ज़ायन की जिल्द-11 की भूमिका में वर्णन करेंगे। इन्शाअल्लाह।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम नहमदुहू व नुसल्ली

मिननुर्रहमान पुस्तक का विज्ञापन

यह एक अत्यन्त अद्भुत पुस्तक है जिसकी ओर पवित्र क़ुर्आन की कुछ हिकमत से भरपूर आयतों ने हमें ध्यान दिलाया। पवित्र क़ुर्आन ने यह भी संसार पर एक भारी उपकार किया है कि भाषाओं के मतभेद का असल फ़ल्सफ़ा वर्णन कर दिया और हमें इस सूक्ष्म हिकमत से अवगत किया कि मानवीय भाषाएँ किस स्त्रोत और खान से निकली हैं और वे लोग कैसे धोखे में रहे जिन्होंने इस बात को स्वीकार न किया कि मानव भाषा की जड़ **ख़ुदा तआला की शिक्षा** है। और स्पष्ट हो कि इस पुस्तक में भाषाओं के अन्वेषण की दृष्टि से यह सिद्ध किया गया है कि संसार में केवल पवित्र क़ुर्आन एक ऐसी किताब है जो इस इस भाषा में अवतरित हुआ है जो **उम्मुल अलसिनः** (समस्त भाषाओं की मां) और इल्हामी तथा समस्त भाषाओं का स्रोत और उद्गम है। यह बात स्पष्ट है कि ख़ुदाई किताब की सर्वांगपूर्ण शोभा और श्रेष्ठता इसी में है जो ऐसी भाषा में हो जो ख़ुदा तआला के मुंह से और अपनी ख़ूबियों में समस्त भाषाओं से बढ़ी हुई और अपनी व्यवस्था में पूर्ण हो, और जब हम किसी भाषा में वह ख़ूबी पाएं जिसके पैदा करने से मानवीय शक्तियां और इन्सानी बनावटें असमर्थ हों तथा वे विशेषताएं देखें जो दूसरी भाषाएँ इनसे असमर्थ और वंचित हों और उन विशेषताओं का दर्शन करें जो ख़ुदा तआला के अनादि और सही ज्ञान के अतिरिक्त किसी सृष्टि का मस्तिष्क उन का आविष्कारक न हो सके तो हमें मानना पड़ता है कि वह

भाषा ख़ुदा तआला की ओर से है। अतः पूर्ण और गहन अन्वेषणों के पश्चात ज्ञात हुआ कि वह **भाषा अरबी** है। यद्यपि बहुत से लोगों ने इन बातों की छान-बीन में अपनी उमरें गुज़ार दी हैं और बहुत प्रयास किया है कि इस बात का पता लगाएं कि उम्मुल अलसिनः कौन सी भाषा है। परन्तु चूंकि उनके प्रयास सरल रेखा पर नहीं थे तथा ख़ुदा तआला से सामर्थ्यवान न थे इसलिए वे सफल न हो सके और यह भी कारण था कि अरबी भाषा की ओर उनका पूर्ण ध्यान न था अपितु एक कृपणता थी इसलिए वे वास्तविकता पहचानने से वंचित रह गए अब हमें ख़ुदा तआला के मुक़द्दस और पवित्र कलाम पवित्र क़ुर्आन से इस बात का मार्ग दर्शन हुआ कि वह इल्हामी भाषा और उम्मुल अलसिनः जिस के लिए पारसियों ने अपनी जगह और इब्रानी वालों ने अपनी जगह आर्य क़ौम ने अपनी जगह दावे किए कि उन्हीं की वह भाषा है वह **अरबी मुबीन** है और दूसरे समस्त दावेदार ग़लती और भूल पर हैं। यद्यपि हमने इस राय को सरसरी तौर पर व्यक्त नहीं किया अपितु अपनी जगह पर पूर्ण अन्वेषण कर लिया है और संस्कृत इत्यादि के हज़ारों शब्दों की तुलना करके और प्रत्येक भाषा के विशेषज्ञों की पुस्तकों को सुन कर और खूब गहरी दृष्टि डाल कर इस परिणाम तक पहुँचे हैं कि अरबी भाषा के सामने संस्कृत इत्यादि भाषाओं में कुछ भी ख़ूबी नहीं पाई जाती अपितु अरबी शब्दों की तुलना में इन भाषाओं के शब्द लंगड़ों, लूलों, अंधों, बहरों, बर्स वालों, कोढियों के समान हैं जो स्वाभाविक व्यवस्था को पूर्णतया खो बैठे हैं और मुफ़रदों का पर्याप्त भण्डार जो पूर्ण भाषा के लिए आवश्यक शर्त है अपने साथ नहीं रखते। परन्तु हम यदि किसी आर्य सज्जन या किसी

पादरी साहिब की राय में ग़लती पर हैं और हमारे ये अन्वेषण उनकी राय में इस कारण से सही नहीं हैं कि हम इन भाषाओं से अपरिचित हैं तो सर्वप्रथम हमारी ओर से यह उत्तर है कि जिस ढंग से हम ने इस बहस का फैसला किया है उसमें कुछ आवश्यक न था कि हम संस्कृत इत्यादि भाषाओं के साहित्य की इबारतों से भली भांति परिचित हो जाएं हमें केवल संस्कृत इत्यादि के मुफ़रदों की आवश्यकता थी। तो हमने पर्याप्त मुफ़रदों का भण्डार एकत्र कर लिया और पंडित तथा यूरोप की भाषाओं के विशेषज्ञों की एक जमाअत से इन मुफ़रदों के उन अर्थों की यथासंभव समीक्षा कर ली और अंग्रेज़ अन्वेषकों की पुस्तकों को भी भली भांति ध्यानपूर्वक सुन लिया है और उन बातों को मुबाहसों में डालकर अच्छी तरह साफ़ कर लिया और फिर संस्कृत इत्यादि भाषाओं से दोबारा गवाही ले ली जिससे विश्वास हो गया कि वास्तव में वैदिक संस्कृत इत्यादि भाषाएं उन ख़ूबियों से रिक्त और वंचित हैं जो अरबी भाषा में सिद्ध हुईं।

फिर दूसरा उत्तर यह है कि यदि किसी आर्य साहिब या किसी अन्य विरोधी को हमारे अन्वेषण स्वीकार नहीं तो उन्हें हम विज्ञापन द्वारा सूचना देते हैं कि हमने अरबी भाषा की श्रेष्ठता और कमाल तथा समस्त भाषाओं से ऊपर होने के तर्क अपनी इस पुस्तक में विस्तारपूर्वक लिख दिए हैं जो निम्नलिखित विवरण सहित हैं-

1-अरबी मुफ़रदों (धातुओं) की व्यवस्था पूर्ण है।

2-अरबी उच्च श्रेणी के नामों के कारणों पर आधारित है जो विलक्षण हैं।

3-अरबी का सिलसिला अतराद सामग्री तथा सर्वांगपूर्ण है।

4-अरबी की तरकीब में शब्द कम और अर्थ अधिक हैं।

5-अरबी भाषा इन्सानी अवस्थाओं का पूर्ण रूप से चित्रण करने के लिए अपने अन्दर पूरी-पूरी शक्ति रखती हो।

अब प्रत्येक को अधिकार है कि हमारी पुस्तक के प्रकाशित होने के बाद यदि संभव हो तो ये खूबियां संस्कृत या किसी अन्य भाषा में सिद्ध करे या इस विज्ञापन के पहुंचने के बाद हमें अपने आशय से सूचना दे कि वह क्योंकर और किस प्रकार से अपनी संतुष्टि करना चाहता है या यदि उसे इन श्रेष्ठताओं में कुछ आपत्ति है या संस्कृत इत्यादि की भी कोई व्यक्तिगत खूबियां बताना चाहता है तो निस्सन्देह प्रस्तुत करे। हम ध्यानपूर्वक उसकी बातों को सुनेंगे परन्तु चूंकि प्राय: भ्रमपूर्ण स्वभाव प्रत्येक क़ौम में इस प्रकार के भी पाए जाते हैं कि उनके हृदय में यह शंका शेष रह जाती है कि शायद संस्कृत इत्यादि में कोई ऐसी छुपी हुई खूबियां हों जो उन्हीं लोगों को मालूम हों जो उन भाषाओं की पुस्तकों को पढ़ते-पढ़ाते हैं। इसलिए हमने इस पुस्तक के साथ पांच हज़ार रुपए का इनामी विज्ञापन प्रकाशित कर दिया है। और यह पांच हज़ार रुपया केवल कहने की बात नहीं अपितु किसी आर्य साहिब या किसी अन्य साहिब का निवेदन आने पर पहले ही ऐसे स्थान पर जमा करा दिया जाएगा जिसमें वह आर्य साहिब या अन्य साहिब भली भांति संतुष्ट हों और समझ लें कि विजय की हालत में बिना द्द्ज के वह रुपया उनको प्राप्त हो जाएगा। परन्तु स्मरण रहे कि रुपया जमा कराने का निवेदन उस समय आना चाहिए जब भाषाओं के अन्वेषण की पुस्तक प्रकाशित हो जाए और जमा कराने वाले को इस बात के बारे में एक लिखित इक़रार देना होगा कि यदि

वह पांच हज़ार रुपए जमा कराने के बाद मुकाबले से इन्कार कर जाए या अपनी डींगों को अंजाम तक पहुँचा न सके तो समस्त हानि अदा करे जो एक व्यापारिक रुपए के लिए किसी समय तक बंद रहने की अवस्था में आवश्यक होती है।

والسلام علی من اتبع الھدٰی

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

حمد و شکر آن خدائے کرد گار
کز وجودش ہر وجودے آشکار

अनुवाद- उस पैदा करने वाले ख़ुदा की प्रशंसा और धन्यवाद अनिवार्य है जिसके अस्तित्व से प्रत्येक वस्तु का अस्तित्व प्रकट हुआ।

این جہان آئینۂ دارِ روئے او
ذرّہ ذرّہ رہ نماید سوئے او

अनुवाद- यह जान उसके चेहरे के लिए दर्पण के समान है कण-कण उसी की ओर मार्ग-दर्शन करता है।

کرد در آئینۂ ارض و سما
آن رخ بے مثل خود جلوہ نما

अनुवाद- उसने पृथ्वी और आकाश के दर्पण में अपना अद्धितीय चेहरा दिखा दिया।

ہر گیاہے عارفِ بنگاہ او
دست ہر شاخے نماید راہ او

अनुवाद- घास का हर पत्ता उसके कोन-व-मकान की मारिफ़त (पहचान) रखता है। और वृक्षों की हर टहनी उसी का रास्ता दिखाती है।

نور مہر و مہ ز فیضِ نور اوست
ہر ظہورے تابعِ منشورِ اوست

अनुवाद- चांद और सूर्य का प्रकाश उसी के प्रकाश का वरदान है हर चीज़ का प्रकटन उसी के शाही आदेश के अन्तर्गत होता है।

ہر سرے سرّے ، زخلوت گاہ اُو
ہر قدم جوید ، درِ با جاہ اُو

अनुवाद- हर रहस्य उसकी रहस्यगाह का एक रहस्य है और हर क़दम उसी का प्रतिष्ठित दरवाज़ा तलाश करता है।

مطلبِ ہر دل جمالِ روئے اوست
گمرہی گرہست، بہر کوئی اوست

अनुवाद- उसी के मुंह का सौन्दर्य प्रत्येक हृदय का अभीष्ट है और कोई गुमराह भी है तो वह भी उसी के कूचे की खोज में है।

مہر و ماہ و انجم و خاک آفرید
صد ہزاران کرد ، صنعت ہا پدید

अनुवाद- उसने चांद, सूर्य, सितारे और पृथ्वी को पैदा किया और लाखों उत्पाद प्रकट कर दिए।

ین ہمہ صُنعش کتابِ کار اوست
بے نہایت ، اندر ین اسرار اوست

अनुवाद- उसके ये समस्त उत्पाद उसकी कारीगरी का दफ़्तर हैं और उनमें उसके असीमित रहस्य हैं।

این کتابے پیش چشم ما نہاد
تا ازو راہ ہدی داریم یاد

अनुवाद- यह नेचर की किताब उसने हमारे आँखों के सामने रख दी ताकि उसके कारण से हम हिदायत का मार्ग स्मरण रखें।

تاشناسی آن خدائے پاک را
کو نماند خاکیان و خاک را

अनुवाद- ताकि तू उस पवित्र ख़ुदा को पहचाने जो दुनिया वालों तथा दुनिया से कोई समानता नहीं रखता।

تا شود معیار بہر وحی دوست
تا شناسی از ہزاران آنچہ زوست

अनुवाद- ताकि ख़ुदाई वह्यी के लिए यह बतौर मापदण्ड के होता कि तू हज़ारों कलामों में से पहचान ले कि कौन सा उस की ओर से है।

تا خیانت را نماند ہیچ راہ
تا جدا گردد سفیدی از سیاہ

अनुवाद- ताकि बेईमानी का कोई मार्ग खुला न रहे और प्रकाश अन्धकार से दूर हो जाए।

بس ہمان شد آنچہ آن دادار خواست
کار دستش شاہد گفتار خاست

अनुवाद- अत: वही हुआ जो ख़ुदा की इच्छा थी और उसका कार्य उसके कलाम का गवाह ठहरा।

مشرکان و انچہ پوزش مے کنند
این گواہان تیر دوزش مے کنند

अनुवाद- मुश्रिक लोग जो बहाने करते हैं ये गवाह (ख़ुदा का कथन कर्म) उन बहानों को तीरों से छलनी कर देते हैं।

گر بگوئی غیر را رحمان خدا
تف زند بر روئے تو ، ارض و سما

अनुवाद- यदि तू किसी अन्य को रहमान ख़ुदा कर दे तो तेरे मुंह पर धरती और आकाश थूकें।

در تراشی ، بہر آں یکتا ، پسر
بر تو بارد ، لعنتِ زیر و زبر

अनुवाद- और यदि उस अद्वितीय के लिए तू कोई बेटा बनाए तो नीचे और ऊपर से तुझ पर लानतें बरसने लगें।

با زبانِ حال گوید ، این جہان
کان خدا ، فرد است و قیوم و یگان

अनुवाद- यह संसार अपने व्यावहारिक रूप से यह कह रहा है कि वह ख़ुदा अद्वितीय, हमेशा क़ायम रहने वाला और एक है।

نے پدر دارد ، نہ فرزند و نہ زن
نے مبدّل شد زِ ایّام کُہن

अनुवाद- न उसका कोई बाप है न बेटा और न पत्नी और न अनादि काल से उसमें कोई परिवर्तन आया।

یک دمے گر رشحِ فیضش کم شود
این ہمہ خلق و جہان برہم شود

अनुवाद- यदि एक पल के लिए भी उसकी दान-वृष्टि कम हो जाए तो यह सम्पूर्ण सृष्टि और संसार अस्त-व्यस्त हो जाएँ।

یک نظر ، قانون قدرت را بہ بین
تا شناسی شانِ ربُّ العالمین

अनुवाद- प्रकृति के नियम पर एक दृष्टि डाल ताकि तू समस्त लोकों के प्रतिपालक को पहचाने।

کاخ دنیا را چہ دید استی بنا
کز پئے آن میگذاری صدق را

अनुवाद- दुनिया के महल की दृढ़ता ही क्या है? जो उसके लिए तू सच्चाई को छोड़ता है।

عابد آن باشد ، کہ پیشش فانی است
عارف آن کو گویدش لاثانی است

अनुवाद- इबादत करने वाला वह है जो ख़ुदा के सामने नश्वर है। आरिफ़ वह है जो कहता है कि वह अनुपम है।

ترک کن ناراستی ، ہم عذر خام
میل سوئے راستی چوں شد حرام

अनुवाद- झूठ और बहाने बनाना छोड़ दे, सच की ओर रुचि करना तुझे क्यों अवैध हो गया।

راہِ بد را نیک اندیشیدۂ
اے ہداک اللہ چہ بد فہمیدۂ

अनुवाद- तू ने ग़लत मार्ग को सही समझ लिया है ख़ुदा तुझे हिदायत दे कैसा ग़लत समझ लिया है।

روئے خود ، خود مے نماید آن یگان
تو کشی تصویر او ، چوں کودکان

अनुवाद- वह एक ख़ुदा अपना चेहरा स्वयं दिखाता है तू बच्चों की तरह उस का चित्र अपने दिल से खींचता है।

آن رخے کان فعلحق بنمودہ است
درحقیقت روئے حقآن بودہ است

अनुवाद- वह चेहरा जिसे ख़ुदा के कार्य ने प्रकट किया है वास्तव में वही ख़ुदा का चेहरा है।

وانچہ خود کردی بتے داری براہ
بت پرستی ہا کنی شام و پگاہ

अनुवाद- परन्तु जो तूने स्वयं बनाया है वह तेरे मार्ग में एक

मूर्ति है और तू सुबह और सायं मूर्ति पूजा करता है-

اے دو چشمے بستہ از انوار اُو

چون نہ بینی روئے او درکار او

अनुवाद- हे वह जिसने उसके प्रकाश अर्थात् उसके कलाम से अपनी दोनों आंखें बंद कर लीं तो उसके कार्य में उसका चेहरा क्यों नहीं देखता।

این چنین در افتراہا چون پری؟

یا مگر از ذات بے چون منکری

अनुवाद- इस प्रकार क्यों बढ़-बढ़ कर झूठ गढ़ता है। शायद तू उस अद्वितीय अस्तित्व से इन्कारी है।

دل چرا بندی دریں دنیائے دون

ناگہان خواہی شدن زیں جابرون

अनुवाद- इस नीच संसार से क्यों दिल लगाता है जहां से तू एकदम बाहर चला जाएगा।

از پئے دنیا بریدن از خدا

بس ہمین باشد نشانِ اشقیا

अनुवाद- दुनिया के लिए ख़ुदा से संबंध तोड़ना यही अभागों की निशानी है।

چون شود بخشائش حق بَر کسے

دل نمے ماند بدنیائش بسے

अनुवाद- जब किसी पर ख़ुदा की मेहरबानी होती है तो उसका दिल दुनिया में कुछ अधिक नहीं लगता।

لیک ، ترکِ نفس کے آسان بود

مردن و از خود شدن یکسان بود

अनुवाद- परन्तु नफ़्स को त्यागना भी आसान नहीं। मरना और अहंकार को त्यागना बराबर है।

آن خدا خود را نمود از کار خویش
کرد قائم شاہد گفتارِ خویش

अनुवाद- उस ख़ुदा ने स्वयं अपने कार्यों से प्रकट किया और उन्हें अपने कलाम का गवाह ठहराया।

ہرچہ او را بود از حُسن مزید
حلیۂ آن پیش چشمِ ماکشید

अनुवाद- इस के अलावा जो और सौन्दर्य उसके अस्तित्व में था उसका हुलिया भी उसने (कलाम द्वारा) हमारे सामने खींच दिया।

تو کشی از پیش خود تصویر اُو
خالق او مے شوی اے تیرہ خو

अनुवाद- तू अपनी ओर से उसका चित्र खींचता है और हे अन्तः मलिन स्वयं उसका स्त्रष्टा बनता है।

آنکہ خود ، از کارِ خود جلوہ نما است
آن خدا نے آنکہ خود از دست ماس

अनुवाद- वह जो अपने कार्य से अपना जलवा दिखा रहा है। ख़ुदा वह है न कि वह जिसे हमारे हाथों ने बनाया है।

اے ستمگر این ہمہ مولائے ماست
آنکہ قرآن مادحِ اُو جا بجا است

अनुवाद- हे ज़ालिम! हमारा मौला वही है जिसकी प्रशंसा क़ुर्आन में जगह-जगह की है।

ہر چہ قرآن گفت مے گوید سما
چشم بکشا تا بہ بینی این ضیا

अनुवाद- जो कुछ क़ुर्आन में कहा वही आकाश भी कहता है आंख खोल ताकि तू उस प्रकाश को देखे।

بس ہمیں فخرے بُود ، اسلام را
کو نماید ، آن خدائے تام را

अनुवाद- इस्लाम को यही गर्व तो प्राप्त है कि वह उस कामिल ख़ुदा को प्रस्तुत करता है।

گوئدش ز انسان کہ از صُنعش عیا
نے تراشد ، از خودش چون دیگران

अनुवाद- वह इसी प्रकार कहता है जो उसकी कारीगरी से प्रकट है। दूसरों की तरह अपने पास से कोई ख़ुदा नहीं बनाता।

غیر مسلم ، خود تراشد پیکرش
خود تراشد ، قامت و پا و سرش

अनुवाद- ग़ैर मुस्लिम उसके अस्तित्व को स्वयं बनाता है वह स्वयं ही उस का क़द, पैर और सर बनाता है।

خود تراشیدہ ، نمیگردد خدا
ہمچو طفلان ، بازی است و افترا

अनुवाद- यह स्वयं बनाया हुआ अस्तित्व ख़ुदा नहीं हो सकता वह तो बच्चों का खिलौना है और झूठ है।

زین تراشیدن جہانے شد تباہ
کم کسے ، سوئے خدا بر دست راہ

अनुवाद- इस ख़ुदा गढ़ने के कारण एक जान बर्बाद हो गई

और किसी को सच्चे ख़ुदा का मार्ग नहीं मिला।

چون تو کورے نیستی ، چشمے کُشا
بین ، چہ ظاہر مے کند ارض و سما

अनुवाद- जब तू अँधा नहीं है तो आंखें खोल और देख कि धरती और आकाश क्या प्रकट करते हैं।

ہر طرف بشنو صدائے القدیر
ذوالجلال و ذوالعلی نورے منیر

अनुवाद- हर ओर यही आवाज़ आती है कि एक शक्तिमान ख़ुदा है एक प्रतापी, सम्माननीय और प्रकाश दायक नूर मौजूद है।

ہیچ مخلوقے خدائے خود مگیر
کے شود ، یک کر مکے چون آن قدیر

अनुवाद- तू किसी सृष्टि को अपना ख़ुदा न बना। एक कीड़ा उस शक्तिमान के समान क्योंकर हो सकता है।

پیش او لرزد زمین و آسمان
پس تو مشت خاک را مثلش مدا

अनुवाद- उसके आगे धरती और आकाश कांपते हैं। इसलिए तू एक मुट्ठी धूल को उसके समान न समझ।

گر خدا گوئی ضعیفے را بزور
جان تو گوید کہ کذّابی و کور

अनुवाद- यदि तू किसी कमज़ोर दृष्टि को बलात ख़ुदा कह भी दे तो स्वयं तेरा दिल बोल उठेगा कि तू झूठा और अँधा है।

دل نمے داند خدا جز آن خدا
این چنین افتاد فطرت ز ابتدا

अनुवाद- दिल सिवाए इस (असली) ख़ुदा के किसी और को ख़ुदा स्वीकार नहीं करता। आरम्भ से मानव-प्रकृति इसी प्रकार की बनी हुई है।

از رہِ کین و تعصب دور شو
یک نظر از صدق کن پُر نور شو

अनुवाद- वैर और पक्षपात के मार्ग को त्याग दे। सच्चाई से विचार कर और प्रकाशमान हृदय वाला हो जा।

کین ریاض عقل را ویران کند
عاقلان را گمراہ و نادان کُند

अनुवाद- वैर और पक्षपात बुद्धि के उद्यान को उजाड़ देते हैं और बुद्धिमानों को गुमराह तथा मूर्ख बना देते हैं।

کے بشر گردد خدائے لایزال
داوری ہا کم کن اے صید ضلال

अनुवाद- एक इन्सान किस प्रकार अनश्वर ख़ुदा बन सकता है। हे गुमराही के शिकार झगड़ा न कर।

آبِ شور اندر کَفت ہست اے عزیز
نازہا کم کن ، اگر داری تمیز

अनुवाद- हे प्रिय! तेरे हाथ में केवल खारा पानी है। यदि तुझ में सभ्यता है तो शेखियां न मार।

تو ہلاکی ، گر نجوئی آن خدا
آنکہ بنمائد تُرا ارض و سما

अनुवाद- तू मर जाएगा यदि उस ख़ुदा को तलाश नहीं करेगा जिसे पृथ्वी और आकाश तुझे दिखा रहे हैं।

ہم بقرآن بین ، جمال آن قدیر
قول و فعلِ حق ، زُلالِ یک غدیر

अनुवाद- तू क़ुर्आन से भी उस शक्तिमान ख़ुदा का सौन्दर्य देख ख़ुदा का कथन और ख़ुदा का कर्म एक ही तालाब के स्वच्छ पानी हैं।

مردُم اندر ، حسرتِ این مدّعا
چون نمے خواہند خلق ، این چشمہ را

अनुवाद- मैं तो इस बात के ग़म से मर गया कि जनता इस झरने की क्यों मांग नहीं करती।

ہست قرآن ، در رہِ دین رہ نما
در ہمہ حاجاتِ دین ، حاجت روا

अनुवाद- क़ुर्आन धर्म के मार्ग का पथ-प्रदर्शक है और धर्म की समस्त आवश्यकताओं को पूर्ण करने वाला है।

آن گروہِ حق ، کہ از خود فانی اند
آب نوش ، از چشمۂ فرقانی اند

अनुवाद- वे वली लोग जो नश्वर हैं वे फ़ुर्क़ानी झरने से पानी पीने वाले हैं।

فارغ اُفتادہ ، زِ نام عزّ و جاہ
دل ز کف ، و از فرق افتادہ کُلاہ

अनुवाद- वे नाम, प्रदर्शन, दौलत और सम्मान की ओर से लापरवाह हैं उनके हाथ से दिल और सर से टोपी गिर गई है।

دور تر از خود بیار آمیختہ
آبرو ، از بہر روئے ریختہ

अनुवाद- अंहकार से दूर और यार से मिल गए हैं और उसके लिए अपने मान-सम्मान से पृथक हैं।

از برون چون اجنبی ، دل پُر زِ یار
کس نداند رازِ شان جز کردگار

अनुवाद- बाह्य तौर पर अजनबी दिखाई देते हैं परन्तु दिल यार के प्रेम से भरा है ख़ुदा के अतिरिक्त उनका भेद कोई नहीं जानता।

دیدنِ شان میدہد یاد از خدا
صدق ورزان در جناب کبریا

अनुवाद- उनके देखने से ख़ुदा याद आता है। ख़ुदा के लिए उन्होंने सच्चाई और वफ़ादारी को ग्रहण किया है।

آن ہمہ را بود ، فرقان رہ برے
ہر یکے زان درشدہ ہمچون درے

अनुवाद- उन सब लोगों का पथ-प्रदर्शक क़ुर्आन ही था और उसी दरवाज़े की बरकत से उनमें से प्रत्येक मोती के समान हो गया।

آن ہمہ زان دلبرے جان یافتند
جان چہ باشد روئے جانان یافتند

अनुवाद- उन सब ने उसी प्रियतम से जीवन प्राप्त किया, जीवन क्या स्वयं उस प्रियतम को पा लिया।

چشم شان شد پاک از شرک و فساد
شد دل شان ، منزل ربّ العباد

अनुवाद- उसकी नज़र शिर्क और फ़साद से पवित्र हो गई और उनका हृदय रब्बुलआलमीन का घर बन गया है।

سیّد شان ، آنکہ نامش مصطفٰے است
رہبر ہر زمرۂ صدق و صفا است

अनुवाद- इन लोगों का सरदार वह है जिसका नाम मुस्तफ़ा है। समस्त सत्यनिष्ठों और नेक लोगों का वही पथ-प्रदर्शक है।

مے درخشد روئے حق در روئے او
بوئے حق آید ز بام و کوئے او

अनुवाद- उसके चेहरे में ख़ुदा का चेहरा चमकता दिखाई देता है। उसके दर और दीवार से ख़ुदा की ख़ुशबू आती है।

ہر کمال رہبری بر وے تمام
پاک روی و پاک رویان را امام

अनुवाद- मार्ग-दर्शन की समस्त खूबियां उस पर समाप्त हैं, स्वयं भी मुक़द्दस है और सब मुक़द्दसों का इमाम है।

اے خدا ، اے چارۂ آزار ما
کن شفاعت ہائے او در کار ما

अनुवाद- हे ख़ुदा! हे हमारे कष्टों की दवा, हमारे मामले में उसकी शफ़ाअत हमें प्रदान कर।

ہر کہ مہرش در دل و جانش فتد
ناگہان جانے در ایمانش فتد

अनुवाद- जिस के जान-व-दिल में उसका प्रेम दाखिल हो जाता है तो उसके ईमान में एकदम एक जान पड़ जाती है।

کے ز تاریکی بر آید آن غراب
کورمدزیں مشرقِ صدق و صواب

अनुवाद- वह कौआ अँधेरे से कब निकल सकता है जो इस

सच्चाई और सही के उदय-स्थल से भागता है।

آنکہ او را ظلمتے گیرد براہ
نیستش چون روئے احمد مہرو ماہ

अनुवाद- वह व्यक्ति जिसे अन्धकार घेर ले उसके लिए अहमद के चेहरे की तरह अन्य कोई चन्द्र और सूर्य नहीं है।

تابعش بحرِ معانی مے شود
از زمینی آسمانی مے شود

अनुवाद- उस का अनुयायी मारिफ़त का एक समुद्र बन जाता है और ज़मीनी से आसमानी हो जाता है।

ہر کہ در راہ محمدؐ زد قدم
نبیاء را شد مثیل آن محترم

अनुवाद- जिस ने मुहम्मद के तरीक़े पर क़दम मारा वह सम्माननीय व्यक्ति नबियों का समरूप बन जाता है।

تو عجب داری ز فوزِ این مقام
پائے بند نفس گشتہ صبح و شام

अनुवाद- तो इस श्रेणी की सफलता पर आश्चर्य करता है क्योंकि तू हर समय अपने नफ़्स का दास है।

اے کہ فخر و ناز بر عیسیٰ تراست
بندۂ عاجز بچشمِ تُو خدا ست

अनुवाद- हे वह व्यक्ति कि तुझे ईसा पर गर्व और नाज़ है और ख़ुदा का एक असहाय बन्दा तेरी नज़र में ख़ुदा है।

شد فراموشت خداوندے ودود
پیش عیسیٰ او فتادی در سُجود

अनुवाद- तुझे मेहरबान ख़ुदा को भूल गया और तू ईसा के आगे सज्दे में गिर गया।

من ندانم این چہ عقل ست و ذکا
بندۂ را ساختن ربُّ السّما

अनुवाद- मैं नहीं समझ सकता कि यह कैसी बुद्धि और मानसिकता है कि एक बन्दे को ख़ुदा बनाया जाए।

فانیان را نسبتے با او کُجا
از صفاتِ او کمال است و بقا

अनुवाद- नश्वर मनुष्यों को ख़ुदा से क्या संबंध उसकी विशेषता तो पूर्ण होना और अनश्वरता है।

چارہ سازِ بندگان قادر خدا
آنکہ ناید تا ابد بر وے فنا

अनुवाद- वह बन्दों का चारागर और शक्तिमान ख़ुदा है जिस पर कभी भी फ़ना (नश्वरता) नहीं आ सकती।

حافظ و ستار و جوّاد و کریم
بیکسان را یارورحمان و رحیم

अनुवाद- सुरक्षा करने वाला दोषों पर पर्दा डालने वाला, दानी और कृपालु है अनाथों का मित्र, असीम दयावान और मेहरबान।

تو چہ دانی آن خدائے پاک را
آن جلال و ، تُو دادی خاک را

अनुवाद- तू उस पवित्र ख़ुदा का प्रताप क्या जान सकता है वह सम्मान का मुक़ाम तो तूने एक पार्थिव मनुष्य को दे रखा है।

ہان دمے ہردم زِ کفّارہ زنی
پس نہ مرد استی کہ کمتر از زنی

अनुवाद- तू हर दम कफ़्फ़ार: की शेखियां ही बघारता रहता है। तो तू मर्द नहीं अपितु और से भी गया गुज़रा है।

نسخۂ سہل است گر یابد سزا
زید ، و گردد بکر زان فعلش رہا

अनुवाद- यह तो बड़ा आसान नुस्ख़ा है कि दण्ड मिले ज़ैद को और बक्र अपने गुनाह से पवित्र हो जाए।

لیک زین نُسخہ نمے یابی نشان
در ورق ہائے زمین و آسمان

अनुवाद- किन्तु तुझे इस नुस्खे का नामोनिशान भी नहीं मिलेगा पृथ्वी और आकाश की पुस्तक के पृष्ठों में।

تا خدا بنیاد این عالم نہاد
ظالمے ہم ننگ دارد زین فساد

अनुवाद- जब से ख़ुदा ने इस दुनिया की बुनियाद रखी है उस समय से अत्याचारियों को भी ऐसी शरारत से शर्म आती है।

چوں ندارد فاسقے آن را پسند
چون پسندد حضرتِ پاک و بلند

अनुवाद- जब एक पापी भी इस बात को पसन्द नहीं करता तो ख़ुदा तआला जो पवित्र है वह उसे किस प्रकार पसन्द कर सकता है।

ماگنہ گاریم نالان نیز ہم
و غیورے ہست رحمان نیز ہم

अनुवाद- हम पापी भी हैं और क्षमा के लिए रोते भी हैं (इसी प्रकार) वह स्वाभिमानी भी है और दयावान भी।

زہر و تریاق است ، در ما مُستتر
آن کشد این مے دہد جان دگر

अनुवाद- हम में विष और विषनाशक दोनों छुपे हुए हैं। वह क़त्ल करता है और यह दूसरा जीवन प्रदान करता है।

زہر را دیدی ، نہ دیدی چارہ اش
آنکہ بودہ از ازل کَفّارہ اش

अनुवाद- तू ने ज़हर (विष) को तो देख लिया परन्तु उसका इलाज न देखा जो हमेशा से उसका कफ़्फ़ार: है।

چوں دو چشمت دادہ اند ، اے بے خبر
پس چرا پوشی یکے وقتِ نظر

अनुवाद- हे बे खबर! जब तुझे दो आंखें दी गई हैं तो देखते समय तू एक को क्यों ढक लेता है।

یک نظر بین سوئے این دنیائے دون
چون بگردی از پئے آن سرنگون

अनुवाद- तनिक इस अधम दुनिया पर दृष्टि डाल कि तू किस प्रकार उसके पीछे भटकता फिर रहा है।

آنچہ داری ، از متاع و منزلت
بے مشقت ہا نگشتہ حاصلت

अनुवाद- जो कुछ भी सामान और सम्मान तेरे पास है वह तुझे बिना परिश्रम के प्राप्त नहीं हुए।

بایدت تا مدتے جہدے دراز
تا خوری از کِشت خود نانے فراز

अनुवाद- एक लम्बे समय की कोशिश चाहिए ताकि तू अपनी खेती से रोटी खाए।

چونؔ ہمین قانون قدرت اوفتاد
بس ہمیں یاد آر در کشتِ معاد

अनुवाद- जब प्रकृति का नियम ऐसा ही है तो आख़िरत की खेती के लिए भी यही बात स्मरण रख।

خوب گفت آن قادر ربّ الوریٰ
لَیْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَاسَعٰی

अनुवाद- समस्त लोकों के प्रतिपालक ख़ुदा ने क्या ख़ूब फ़रमाया है कि इन्सान को अपनी कोशिश का बदला अवश्य मिलता है।

ہم درین معنی ست گر تو بشنوی
یادگار مولوی در مثنوی

अनुवाद- यदि तू सुने तो इसी मतलब का निबंध वह भी है जो मस्नवी में मौलवी मसनवी की यादगार वह भी है।

گندم از گندم بروید جو زِ جو
از مکافاتِ عمل غافل مشو

अनुवाद- कि गेहूँ से गेहूँ पैदा होता है और जौ से जौ। अत: तू अमल के बदले से लापरवाह मत हो।

آنکہ بر کفّارہ ہا خاطر نہاد
عقل و دین از دست خود یکسر بداد

अनुवाद- जिसने कफ़्फ़ार: पर दिल जमा लिया उसने बुद्धि एवं धर्म दोनों को बराबर कर दिया।

دین و دنیا جہد خواہد ہم تلاش
رو براہش جہد کن نادان مباش

अनुवाद- धर्म और संसार मेहनत और तलाश को चाहते हैं तू भी उसके मार्ग में प्रयास कर और ना समझ न बन।

तत्पश्चात स्पष्ट हो कि इस पुस्तक के लिखने का कारण यह है कि हम ने इस से पूर्व विज्ञापन के चार भाग आथम साहिब के बारे में प्रकाशित किए थे जिन में पादरी सज्जनों को भली भांति समझाया गया था कि वास्तव में वह भविष्यवाणी पूरी हो चुकी है जो हमने मिस्टर अब्दुल्लाह आथम के बारे में की थी। परन्तु अफ़सोस कि पादरी सज्जनों ने हमारे उन विज्ञापनों को ध्यानपूर्वक नहीं पढ़ा और अब तक गाली-गलौज, असंतुलन और अपशब्दों के इस्तेमाल करने से नहीं रुकते। और इस बेहूदा बात पर बार-बार बल देते हैं कि भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई। परन्तु हमने जो हमारा कर्तव्य था अदा कर दिया। अर्थात् यह कि यदि आथम साहिब ने सच की ओर रुजू (लौटना) नहीं किया जो भविष्यवाणी की आवश्यक और अटल शर्त थी कि वह सामान्य जल्से में क़सम खा कर चार हज़ार रुपए हम से बतौर जुर्माना ले लें। किन्तु आथम साहिब ने क़सम खाने से इन्कार कर दिया। और हम चार हज़ार के विज्ञापन में सिद्ध कर चुके हैं कि उनका यह बहाना कि क़सम उनके धर्म में मना है सर्वथा अलाभकारी झूठ है। ओर उनके बुज़ुर्ग हमेशा क़सम खाते रहे हैं। किन्तु आथम साहिब ने इन सबूतों का कुछ उत्तर न दिया। हाँ डाक्टर मार्टिन क्लार्क ने अमृतसर से एक गन्दा विज्ञापन जो उनके दुर्गन्धयुक्त स्वभाव का एक नमूना था जारी किया। जिस का सारांश यही था कि हमारे धर्म में क़सम खाना ऐसा ही मना है जैसा कि मुसलमानों में सुअर का माँस खाना। परन्तु अफ़सोस कि उनको यह ख़याल न आया कि यदि क़सम खाना सुअर के माँस के बराबर है तो यह सुअर क़सम खाने का पोलूस साहिब अपने सम्पूर्ण जीवन में खाते रहे। पतरस ने भी

खाया। तो फिर आथम साहिब पर क्यों अवैध हो गया। इस बात को कौन नहीं जानता कि क़सम खाना ईसाइयों में केवल वैध ही नहीं अपितु कुछ अवसरों पर अनिवार्य बातों में से है। अंग्रेज़ी अदालतें जो किसी व्यक्ति को धर्म के विरुद्ध विवश नहीं करती उन्होंने भी ईसाई धर्म को क़सम खाने से बाहर नहीं रखा और स्वयं आथम साहिब का अदालतों में क़सम खाना सिद्ध है। इसलिए चाहिए था कि हज़रात पादरी साहिबान या तो आथम साहिब को क़सम खाने पर विवश करते या उन से नालिश करवाते ताकि उसी के सन्दर्भ में उन्हें क़सम खानी पड़ती और या सामान्य विज्ञापन देते कि वास्तव में आथम साहिब ही झूठे हैं परन्तु उन्होंने इसकी बजाए सर्वथा हठधर्मी से गालियां देनी आरम्भ कर दीं और यह नीच बहाना प्रस्तुत किया कि आथम खुले-खुले कब इस्लाम लाया परन्तु एक शांत स्वभाव इन्सान समझ सकता है कि वह शर्त जो भविष्यवाणी में दर्ज है उस शर्त के ये शब्द नहीं हैं कि यदि आथम खुले-खुले तौर पर इस्लाम ले आएगा तो मृत्यु से बचेगा अन्यथा नहीं। अपितु भविष्यवाणी में केवल रुजू की शर्त है और रुजू का शब्द गुप्त तौर पर सच स्वीकार करने पर भी मार्ग दर्शन करता है। तो इस स्थिति में खुले-खुले तौर पर इस्लाम की मांग सर्वथा मूर्खता है।

सोचना चाहिए कि ख़ुदा तआला का अपने इल्हाम में इन शब्दों का छोड़ना कि आथम खुले-खुले तौर पर इस्लाम ले आएगा और उसके मुकाबले पर रुजू का शब्द प्रयोग करना जो सच की ओर रुजू की एक तुच्छ हालत पर भी चरितार्थ हो सकता है। वर्णन शैली स्पष्ट तौर पर बता रही थी कि खुला-खुला इस्लाम लाना भविष्यवाणी का

आवश्यक उद्देश्य✷ नहीं यदि यही आवश्यक होता तो असल शब्द जिन से यह मतलब स्पष्ट तौर पर अदा होता है क्यों छोड़ दिए जाते। यह एक ऐसी बात है जो प्रत्येक इन्साफ़ करने वाले के लिए विचार करने का स्थान है। और मैं विश्वास नहीं करता कि कोई पवित्र हृदय व्यक्ति एक पल भी इस पर विचार करके फिर सन्देहों एवं शंकाओं की कठिनाइयों में पड़े। विरोधियों का समस्त मातम तो इस बात पर है कि आथम ने अपनी जीभ से सामान्य लोगों में इस्लाम का इकरार क्यों न किया। परन्तु प्रश्न यह है कि क्या ऐसे खुले-खुले इस्लाम लाने की शर्त भविष्यवाणी में थी? क्या उस प्रलेख में जिस पर दोनों पक्षों के हस्ताक्षर मुबाहस: के दिन हो गए थे यह लिखा था कि अज़ाब न आने की यह शर्त है कि आथम खुले-खुले तौर पर इस्लाम से सम्मानित हो जाए। अपितु खुले-खुले तो क्या उस प्रलेख में तो इस्लाम की भी कुछ चर्चा नहीं थी केवल सच की ओर रुजू की शर्त है। और स्पष्ट है कि रुजू का शब्द जैसा कि कभी खुले-खुले इस्लाम लाने पर बोला जा सकता है ऐसा ही कभी दिल में स्वीकार करने पर भी चरितार्थ होता है। इस से तो यही सिद्ध हुआ कि आथम के खुले-खुले इस्लाम लाने पर कोई निश्चित शर्त न थी। अन्ततः यह दो संभावनाओं में से यह भी एक संभावना थी। फिर इसी पर बल देना क्या ईमानदारी का काम था, जबकि एक संभावना की दृष्टि से स्वयं आथम ने अपनी पृथकता और भयभीत हालत दिखाकर भविष्यवाणी की सच्चाई प्रकट कर दी

✷नोट- सर्वज्ञ और दूरदर्शी ख़ुदा का भविष्यवाणी की शर्त में खुले-खुले इस्लाम की चर्चा न करना स्वयं इस बात की ओर संकेत है कि गुप्त तौर पर रुजू करेगा। इसी से।

तो क्या यह एक नीचता नहीं जो इस परिणाम को गुप्त रखा जाए जो उसकी स्वयं अपनी पृथकता और भयपूर्ण हालत से भविष्यवाणी के बारे में स्थापित हो गया। हम ने कब और किस समय आथम के खुले-खुले इस्लाम लाने की शर्त लिखी थी। फिर जिन्होंने खुला-खुला इस्लाम लाना आवश्यक समझा उन्होंने सर्वथा बेईमानी से सच को नहीं छुपाया? क्या उन्होंने हमारे शब्दों की उपेक्षा करके आपराधिक बेईमानी नहीं की? क्या यह सच नहीं है कि यह कहना कि बशर्ते कि लोगों के सामने खुला-खुला इस्लाम ले आए और यह कहना कि सच की ओर रुजू कर ले। ये दोनों वाक्य एक ही भार की हालत नहीं रखते। और यह कहना कि ज़ैद जो एक ईसाई है उसने सच की ओर रुजू किया है अपने बताने में इस दूसरे कथन के समान नहीं कि ज़ैद खुले-खुले तौर पर इस्लाम से सम्मानित हो गया अपितु सच की ओर रुजू होने की ख़बर में इस बात की संभावना शेष है कि कुछ शक्तिशाली सन्दर्भों में इस्लाम लाने का परिणाम निकाला गया हो और अभी खुले-खुले तौर पर ज़ैद इस्लाम से सम्मानित न हुआ हो। इसी कारण से ऐसी ख़बर का सुनने वाला प्रायः प्रश्न भी करता है कि क्या वह खुले-खुले तौर पर इस्लाम से सम्मानित हुआ या अभी गुप्त है। और प्रायः यह उत्तर पाता है कि नहीं खुले-खुले तौर पर नहीं अपितु कुछ प्रसंगों से उसका रुजू मालूम हुआ है। तो इस से सिद्ध हुआ कि रुजू का शब्द खुले-खुले इस्लाम लाने पर निश्चित तर्क नहीं अपितु जैसा कि हम वर्णन कर चुके हैं दोनों संभावनाओं पर आधारित है और एक भाग में उसे सीमित करना ऐसी बेईमानी है जिसे एक बहुत बड़े पापी के अतिरिक्त अन्य कोई सभ्य पुरुष इस्तेमाल नहीं

कर सकता। हाँ ऐसे अवसर पर विरोधी यह अधिकार रखता है कि शक्तिशाली प्रसंगों की मांग करे जिनके कारण से कह सकते हों कि उसने गुप्त तौर पर अवश्य सच की ओर रुजू किया, यद्यपि जीभ से उस का क़ाइल नहीं। तो यहां यह प्रश्न अवश्य प्रस्तुत हो सकता है कि आथम ने अपने सच की ओर रुजू करने के कौन से प्रसंग प्रकट किए जिन से भविष्यवाणी का पूर्ण होना सिद्ध हो। तो इस का उत्तर यह है कि ईसाइयों के कठोर आग्रह के बावजूद आथम का नालिश न करना जिस के बारे में उसे हमारी मांग पर क़सम भी खाना पड़ती उसके सच की ओर रुजू का प्रथम प्रसंग है। फिर इसके बाद उसके भयभीत रहने का अपनी जीभ से रो-रो कर इकरार करना यह दूसरा प्रसंग है और फिर एक भयावह हालत बनाकर और बदहवास हालत बना कर उसका एक शहर से दूसरे शहर भागते फिरना यह तीसरा प्रसंग है। फिर यह कहना कि ख़ूनी फ़रिश्तों ने तीन स्थानों पर मुझ पर तीन आक्रमण किए यह चौथा प्रसंग है और फिर चार हज़ार रुपए प्रस्तुत करने के बावजूद क़सम न खाना यह पांचवां प्रसंग है, और इनका विवरण निम्नलिखित है-

1-प्रथम यह कि आथम ने अपनी इस भयभीत होने की हालत से जिसका उसे स्वयं इकरार भी है जो 'नूर अफ़्शां' में प्रकाशित हो चुका है बड़ी सफ़ाई से यह सबूत दे दिया है कि वह उन दिनों में अवश्य भविष्यवाणी की श्रेष्ठता से डरता रहा। अर्थात् उसने अपनी व्याकुलतापूर्ण गतिविधियों तथा कार्यों से सिद्ध कर दिया कि एक बड़े ग़म ने उसको घेर लिया है और एक जानलेवा आशंका हर समय और हर दम उसको लगी हुई है, जिसके डराने वाले विचारों ने अन्ततः

उसे अमृतसर से निकाल दिया।

स्पष्ट हो कि यह मनुष्य की एक स्वाभाविक विशेषता है कि जब कोई बड़ा भय और घबराहट उसके हृदय पर छा जाए और चरम श्रेणी की बेचैनी और व्याकुलता तक नौबत पहुँच जाए तो उस भय के भयंकर दृश्य भिन्न-भिन्न प्रकार के विचारों के रूप में उस पर आने आरम्भ हो जाते हैं और अन्त में वे भयभीत करने वाले दृश्य व्याकुलतापूर्ण गतिविधियों तथा भागने की ओर विवश करते हैं। इसी की ओर तौरात 'इस्तिस्ना' में भी संकेत है कि इस्राईली क़ौम को कहा गया कि जब तू अवज्ञा करेगी और ख़ुदा तआला के कानून और सीमाओं (हुदूद) को छोड़ देगी तो तेरा जीवन तेरी नज़र में निराधार हो जाएगा और ख़ुदा तुझे एक धड़का और जी (मन) की रंजीदगी देगा और तेरे पांव के तलवे को सुकून न मिलेगा तू जगह-जगह भटकता फिरेगा। अतः प्रायः डराने वाले विचार रूप बनी इस्राईल की नज़र के सामने पैदा हुए और स्वप्नों में दिखाई दिए जिन के भय से वे अपने जीने से निराश हो गए और पागलों की तरह एक शहर से दूसरे शहर भागते फिरे।

अतएव यह हमेशा से अल्लाह तआला की सुन्नत है कि भय की तीव्रता के समय कुछ-कुछ डराने वाली चीज़ें दिखाई दे जाया करती हैं और जैसे-जैसे बेचैनी और भय बढ़ता जाता है वे साक्षात् रूप तीव्रता और भय के साथ प्रकट होते जाते हैं। अब निश्चित समझो कि आथम को डराने वाली भविष्यवाणी सुनने के बाद यही हालत सामने आई।

मुबाहसः के जल्से के प्रतिभाशाली दर्शकों पर यह बात छुपी नहीं कि भविष्यवाणी के सुनने के साथ ही आथम के चेहरे पर एक

भयानक प्रभाव पैदा हो गया था और उसके हवास की परेशानी उसी समय से दिखाई देने लगी थी कि जब वह भविष्यवाणी उसे सुनाई गई। फिर वह दिन प्रतिदिन बढ़ती गई और आथम के दिल और दिमाग को प्रभावित करती गई और जब चरम सीमा को पहुँच गई जैसा कि नूर अफ़्शां में स्वयं आथम ने प्रकाशित करा दिया तो भयभीत करने वाले विचारों का दृश्य आरम्भ हो गया और प्रारम्भ इस से हुआ कि आथम को ख़ूनी सांप दिखाई देने लगे। फिर तो असंभव था कि सांपों वाली भूमि में वह रहन-सहन रखता। क्योंकि सांप का भय भी शेर के भय से कुछ कम नहीं होता। तो उसने विवश होकर उस भूमि से जहां सांप दिखाई दिया था जो उसकी दृष्टि में विशेष तौर पर उसी को डसने के लिए आया था किसी दूर के शहर की ओर कूच करना हित में समझा या यों कहो कि सांप को देखने के बाद भविष्यवाणी का चित्र एक ऐसी चमक के साथ उसे दिखाई दिया कि उस चमक के सामने वह ठहर न सका और आन्तरिक घबराहट ने भागने पर विवश किया और आथम साहिब का यह कहना कि वह सांप शिक्षा प्राप्त था और उनके डसने को हमारी जमाअत के कुछ लोगों ने छोड़ा था। इसकी बहस हम अलग से वर्णन करेंगे। क्रियात्मक तौर पर यह वर्णन करना आवश्यक है कि आथम साहिब के इक़रार के अनुसार अमृतसर छोड़ने का कारण वह सांप ही था जिसने आथम साहिब को भयंकर रूप दिखा कर ठीक गर्मी के मौसम में उनको सफ़र करने का कष्ट दिया और बड़ी घबराहट के साथ पत्नी और बच्चों से उन्हें पृथक करके लुधियाना में पहुंचाया, परन्तु अफ़सोस कि वह सांप न मारा गया और न उसका कोई छोड़ने वाला पकड़ा गया। क्योंकि वह

केवल दिखाई ही देता था तथा कोई शारीरिक अस्तित्व न था। निष्कर्ष यह कि सांप की प्रकोपी चमकार और उसे देख कर आथम साहिब का अमृतसर छोड़ना एक ऐसी बात है कि एक सत्य के जिज्ञासु न्यायवान की सब जटिल समस्याएँ इसी से हल हो जाती हैं। समस्त संसार अँधा नहीं प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि यह आरोप कि जैसे हम ने आथम साहिब को डराने के लिए एक शिक्षित सांप उनकी कोठी में छोड़ दिया था बुद्धि के नज़दीक क्या वास्तविकता रखता है। तो यह पहला आरोप है या यों कहो कि यह वह पहला अदृश्य (ग़ैबी) आक्रमण है जिसके मायने हम में और ईसाइयों में विवादित हैं जिसमें हमारे विरोधी मौलवी और उन के ऊबाश चेले भी ईसाइयों के साथ हैं।

परन्तु आथम साहिब ने उस शिक्षा प्राप्त सांप का तथा इस बात का कि वह हमारी ओर से छोड़ा गया था अब तक कोई सबूत नहीं दिया और हम भी तार्किक तौर पर वर्णन कर चुके हैं कि यह सांप बाहर से कदापि नहीं आया अपितु आथम साहिब के ही दिल-व-दिमाग़ से निकला था।

चूंकि आथम के हृदय पर भविष्यवाणी का अत्यन्त ज़बरदस्त प्रभाव हो चुका था और हर समय एक तीव्र भय उसकी दृष्टि के सामने रहा था, इसलिए अवश्य था कि कोई भयंकर दृश्य भी उनकी आँखों के सामने फिर जाए। इसलिए उनकी भयभीत कल्पना शक्ति को सांप दिखाई देगा जिसे अरबी में हय्य: कहते हैं। क्योंकि सांप इन्सान की नस्ल का प्रथम और प्रारंभिक शत्रु है और व्यवहारिक रूप से कहता है कि "हय्य: अलल मौत" अर्थात् मौत की ओर आ जा।

इसलिए इसका नाम हय्यः हुआ।

तो चूंकि सांप मृत्यु का अवतार है इसलिए आथम साहिब को पहले यही दिखाई दिया जिसका आथम साहिब ने नूर अफ़्शां में रो-रो कर इक़रार किया है कि अवश्य मैं मौत से डरता रहा। तो ऐसे डरने वाले को यदि सांप दिखाई दे गया तो कोई वास्तविकता को पहचानने वाला इस से आश्चर्य नहीं करेगा और ऐसा दृश्य आथम साहिब पर ही कुछ निर्भर नहीं करता अपितु यह तो प्रकृति का सामान्य नियम है कि भय की अधिकता के समय ऐसे अजूबे अवश्य दिखाई दिया करते हैं। भला यह तो सांप है कुछ लोग अधिक भय के समय जब वे अंधकारमय रात में अकेले चलते हैं तो भूत को भी देख लेते हैं और वास्तविकता यह होती है कि जब अंधकारमय रात और अकेलापन और क़ब्रिस्तान के बियाबान में हृदय पर भय विजयी हुआ और भयपूर्ण कल्पनाएँ आग के युग की तरह उड़ने लगीं तो फिर क्या था तुरन्त आँखों के सामने एक देव विकराल रूप के साथ उपस्थित हो गया और रूप यह दिखाई दिया कि जैसे एक काला भूत दूर से दौड़ा चला आता है जिसकी शक्ल अत्यन्त भयावह एक पहाड़ का पहाड़ छोटी गर्दन, काला रंग, चोटी आकाश पर, पैर पृथ्वी पर मोटे-मोटे होंठ, पीले-पीले दांत और फिर बहुत लम्बे और बाहर निकले हुए, चपटी नाक दबा हुआ था, लाल-लाल आंखें बाहर निकली हुई, सर पर लम्बे दो सींग, मुंह से आग के शोले निकल रहे हैं तो जबकि ऐसी हालतों में भूत भी दिखाई दे जाया करते हैं फिर यदि आथम साहिब ने सांप देख लिया तो क्या ग़ज़ब हुआ। ऐसा सांप देखने से कौन इन्कार करेगा। आपत्ति तो इसमें है और कोई शिक्षित सांप किसी

इन्सान ने छोड़ा था जो आथम साहिब की शक्ल और रूप से अच्छी तरह परिचित था, अफ़सोस कि आथम साहिब ने उस का कोई सबूत नहीं दिया। काश वह क़सम ही खा लेते ताकि वह इसी प्रकार स्वयं को उस आरोप से बरी करते जो इन बनावटी बातों से उन पर लग गया था। परन्तु ख़ैर हम अब भी उनको **पूर्णतः झुठलाने** वाले नहीं। हमारा तो ईमान है कि उनको अवश्य सांप दिखाई दिया था परन्तु यह सांप उन्हीं की कल्पनाओं का परिणाम था और इस बात पर ठोस तर्क था कि भविष्यवाणी की पूर्ण श्रेष्ठता उनके हृदय पर छा गई थी।

या यों भी कह सकते हैं कि जिस प्रकार यूनुस की क़ौम को अज़ाब के फ़रिश्ते साक्षात् रूपों में दिखाई देते थे इसी प्रकार इनको भी सांप इत्यादि साक्षात् दिखाई दिए। परन्तु साथ ही आवश्यक तौर पर इस बात को स्वीकार करना पड़ता है कि जिस व्यक्ति का भय एक धार्मिक भविष्यवाणी से इस सीमा तक पहुँच जाए कि उसको सांप इत्यादि भयावह चीज़ें दिखाई दें यहां तक कि वह हताश, भयभीत, परेशान, बेचैन और पागल सा होकर शहर-शहर भागता फिरे और बदहवासों तथा भयभीतों की तरह जगह-जगह भटकता फिरे। ऐसा व्यक्ति निस्सन्देह निश्चित अथवा काल्पनिक तौर पर उस धर्म का सत्यापन करने वाला हो गया है जिस के समर्थन में वह भविष्यवाणी की गई थी और यही मायने **सच की ओर रुजू करने के हैं,** और यही वह हालत है जिसको अवश्य ही रुजू की श्रेणी में से किसी श्रेणी पर चरितार्थ करना चाहिए। मैं जानता हूं कि आथम साहिब का इस भविष्यवाणी से जो इस्लाम धर्म की सच्चाई के लिए की गई थी जिसके साथ सच की ओर रुजू की शर्त भी थी इतना भयभीत होना कि

सांप दिखाई देना और भालों तथा तलवारों वाले दिखाई देना ये ऐसी घटनाएं हैं कि प्रत्येक बुद्धिमान जो उनको एक जगह करके देखेगा वह निःसंकोच इस परिणाम तक पहुँच जाएगा कि निस्सन्देह ये सब बातें भविष्यवाणी के ज़ोरदार दृश्य हैं और जब तक किसी के हृदय पर ऐसा भय छा जाने वाला न हो जो पूर्ण श्रेणी तक पहुँच जाए तब तक ऐसे दृश्यों की कदापि नौबत नहीं आती। जो व्यक्ति इस्लाम को झुठलाने वाला हो और हज़रत ईसा के काल तक ही इल्हाम पर मुहर लगा चुका हो क्या वह इस्लामी भविष्यवाणी से इतना भयभीत हो सकता है सिवाए इस स्थिति के कि वह अपने धर्म के बारे में सन्देह में पड़ गया हो और इस्लाम की श्रेष्ठता की ओर झुक गया हो।

यदि इन प्रसंगों के बावजूद आथम साहिब को फिर भी उन के सच छुपाने पर न पकड़ा जाए और बहुत ही नर्मी की जाए फिर भी यह मांग न्याय की दृष्टि से उनके ज़िम्मे शेष रहती है कि जब वह अपने भय के कारणों को अर्थात् तीन आक्रमणों को इस पहलू पर सिद्ध नहीं कर सके जिस से वे समस्त आक्रमण इन्सानी आक्रमण समझे जाते तो अब इस प्रश्न से बचने के लिए कि क्यों यह न समझा जाए कि ये उनके अनुमान से दूर अवलोकन, उनके जिनमें से सर्वप्रथम सांप के आक्रमण का अवलोकन है उन्हीं की भयपूर्ण कल्पनाओं का परिणाम है और उन्हीं के भयभीत मस्तिष्क से साक्षात् हो गए हैं। कम से कम यह आवश्यक था कि वह इस बुद्धि के क़रीब आरोप से बरीअत प्रकट करने के लिए क़सम खा जाते।

अर्थात् सामान्य जल्से में क़सम खाकर यह वर्णन कर देते कि वह इल्हाम को ख़ुदा की ओर से इल्हाम समझ कर नहीं डरे और

न इस्लाम की सच्चाई उनके दिल में समाई अपितु निश्चित तौर पर सिधाए हुए सांप से लेकर अन्त तक तीन निरन्तर आक्रमण हमारी जमाअत की ओर से उन पर हुए जिन से वह भयभीत रहे। क्योंकि इस मुक़द्द्मः का रूप ऐसा है कि केवल हमारा इल्हाम ही उनको दोषी नहीं करता अपितु उनके साथ उनको उन्हीं का कथन और कर्म भी दोषी कर रहा है।

यह स्मरण रहे कि यह वही आथम साहिब हैं जिन्होंने बहस से पहले एक अपना हस्ताक्षर किया हुआ दस्तावेज़ हमें दे दिया था कि कोई निशान देखने पर मैं अपने धर्म का सुधार कर लूँगा जिस से हम परिणाम निकालते हैं कि वह अपने अन्दर कुछ सुधार करने का साहस भी रखते थे। तो भयानक दृश्य जो उनके लिए निशान का आदेश रखते थे उस गुप्त रुजू के प्रेरक हो गए।

(2)- फिर दूसरा प्रसंग यह है कि जब आथम साहिब अमृतसर से सिधाए हुए सांप के आक्रमण से डर कर भागे और लुधियाना में अपने दामाद के पास शरणगत हुए तो वहां भी भयंकर भय के दौरा के समय वही साक्षात् दृश्य आथम साहिब की आंखों के आगे फिर गया जो भय के प्रभुत्व के समय फिरा करता है। परन्तु अब की बार उनको सांप दिखाई नहीं दिया अपितु इस से भी बढ़कर भयानक हालत पैदा हुई। अर्थात् कुछ हथियारबन्द लोग भालों के साथ उनको दिखाई दिए कि जैसे वे इनके कोठी के इहाते के अन्दर आ कर बस निकट ही आ पहुंचे हैं और क़त्ल करने के लिए तैयार हैं। हमें विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि इस आक्रमण के बाद आथम साहिब अपनी कोठी में बहुत रोते रहे और कभी यह वर्णन नहीं किया कि किसी

इन्सान ने आक्रमण किया अपितु हर समय एक गुप्त हाथ का भय उनके चेहरे पर प्रकट था और वह भय और बेचैनी बढ़ती गई और दिल का दुखी होना तथा धड़कना बढ़ता गया, यहां तक कि प्रकोपित यहूदियों की तरह पांव के तलवे ने फिर बेचैनी प्रकट की और वह कोठी भी कुछ डरावनी सी प्रतीत हुई और सच भी था कि जिस कोठी के इहाते में ऐसे हथियारबन्द प्यादे और सवार घुस आए कि पुलिस के कठोर प्रबंध के बावजूद जो सुरक्षा के लिए दिन-रात वहीं जमे रहते थे पकड़े न गए और न उनका हुलिया मालूम हो और न यह पता लगा कि किस मार्ग से आए और किस मार्ग से चले गए। इस भयानक कोठी में आथम साहिब कैसे रह सकते थे।

मनुष्य स्वाभाविक तौर पर यह आदत रखता है कि जिस स्थान से एक बार उसे भय लगे तो फिर उसी स्थान पर रात को रहना पसन्द नहीं करता। तो इन्हीं कारणों से आथम साहिब को लुधियाना भी छोड़ना पड़ा।

लेकिन अब बहस यह है कि वास्तव में कोई जमाअत भालों और तलवारों वाली लुधियाना में आथम साहिब की कोठी में घुस आई थी? इस बहस को हम केवल दो वाक्यों से तय कर सकते हैं कि यदि अमृतसर में आथम साहिब पर वास्तव में किसी सिधाए हुए सांप ने आक्रमण किया था तो फिर इस स्थान पर भी भालों और तलवारों वाले आथम साहिब पर अवश्य आ पड़े होंगे और यदि आथम साहिब उस पहले आक्रमण के वर्णन करने में सच्चे हैं तो इस दूसरे आक्रमण में भी सच्चे होंगे।

परन्तु अफ़सोस तो यह है कि जैसे आथम साहिब अमृतसर में

सांप पकड़ने में असफल रहे और उसे मार भी न सके यही असफलता आथम साहिब को यहां भी प्राप्त हुई, इसके बावजूद कि पुलिस का प्रबंध और दामाद की सावधानियां अमृतसर से अधिक थीं।

और यह अफ़सोस और भी अधिक होता है जब हम यह सोचते हैं कि आथम जैसा एक अनुभवी सरकारी कर्मचारी पेन्शनर जो लम्बे समय तक ऐक्स्ट्रा असिस्टेंट का कार्य करता रहा क्या वह इस फ़ौजदारी कानून से अपरिचित था कि जब इसे मारने के लिए आगे बढ़ने तक नौबत पहुंची थी तो वह अदालत द्वारा कानून के अनुसार हमारा मुचलका लिखवा कर अमन से लुधियाना में लेटा रहता। यह बात कुछ कम नहीं थी कि उनके कथानुसार जो बाद में बनाई गई है कि क़त्ल करने के लिए आक्रमण हुआ परन्तु उन से तो इतना भी न हो सका इस अत्याचारपूर्ण घटना को कुछ अख़बारों में ही दर्ज करा देते अपितु किसी के कथानुसार कि मुश्ते कि बाद अज़ जंग याद आयद बर कला ख़ुद बायद ज़द इन बातों को इस समय प्रकट किया जब वह समय ही गुज़र गया और पन्द्रह महीने की मीआद समाप्त हो गई। फिर भी यारों, दोस्तों ने बहुत ज़ोर मारा कि आथम साहिब अब भी नालिश कर दें। परन्तु चूंकि वह अपने दिल में जानते थे कि सब आकाशीय बातें हैं और समझते थे और नालिश करना तो स्वयं अपने हाथ से मौत का सामान एकत्र करना है और स्वयं इतनी अशिष्टता भी ख़तरनाक है कि अपने भय और रुजू को अन्य पहलू में लाकर छुपा दिया और ख़ुदा के उपकार को स्मरण न रखा!!! इसलिए उन्होंने डाक्टर हेनरी मार्टिन क्लार्क के अत्यधिक सियापे के बावजूद नालिश न की और यह भी मालूम नहीं था कि नालिश के

आयोजन पर क़सम भी दी जाएगी। अतः इसी दुविधा से जो उनकी जान पर विपदा लाती थी किनारा किया।

परन्तु फिर भी यह पृथकता बेफ़ायदा है क्योंकि ख़ुदा तआला अपराधी को बिना दण्ड नहीं छोड़ता मूर्ख पादरियों की समस्त डींगें मारना आथम की गर्दन पर है।

यदि आथम ने नालिश और क़सम से पहलू बचा कर अपने इस ढ़ंग से साफ़ बता दिया कि सच की ओर अवश्य रुजू किया और तीन आक्रमणों की घटना शैली से भी बता दिया कि वे आक्रमण इन्सानी आक्रमण नहीं थे परन्तु फिर भी **आथम इस अपराध से बरी नहीं है कि उसने सच्चाई को घोषणापूर्ण तौर पर जीभ से व्यक्त नहीं किया!!!** केवल उसके कार्यों पर विचार करने से बुद्धिमानों पर सच्चाई प्रकट हो गई।

(3)- तीसरा प्रसंग यह है कि जब आथम साहिब लुधियाना में भी आकाशीय हथियारबन्द लोगों का अवलोकन कर चुके थे तो उनका दिल वहां रहने से भी टूट गया और सच के रोब ने उनको पागल सा बना दिया। तब वह अपने दूसरे दामाद की ओर दौड़े जो **फ़ीरोज़पुर** में था। शायद इस से यह मतलब होगा कि वह अपने इन प्रियजनों की अन्तिम मुलाकातें समझते होंगे कि शायद गुप्त रुजू विश्वसनीय न हो और दिल में ठान लिया होगा कि यदि मैं आन्तरिक तौबः और रुजू के बावजूद फिर भी बच न सकूँ तो ख़ैर अपनी लड़कियों और परिजनों को तो मिल लूँ। बहरहाल वह गिरते-पड़ते फ़ीरोज़पुरर पहुँचे और भविष्यवाणी की श्रेष्ठता ने उनकी वह हालत बना रखी थी जिस से हताशा और भय तथा परेशानी हर समय प्रकट हो रही थी और

सच्चाई से भयभीत होने की हालत में जो भय और कष्ट उस व्यक्ति पर आता है जो विश्वास रखता है या गुमान रखता है कि शायद ख़ुदा का अज़ाब उतर आए। ये सब निशानियां उनमें पाई जाती थीं।

तो जब भय यहां भी अपने अन्त को पहुँचा तो **दौरी रोग** की तरह वही दृश्य पुनः दिखाई दिया जो लुधियाना में दिखाई दिया था। परन्तु इस बार वह क़ुदरत का करिश्मा अत्यन्त प्रतापी था जिसने आथम साहिब के दिल पर बहुत ही प्रभाव डाला।

अतः वह लिखते हैं कि फिर मैंने **फ़ीरोज़पुर** में देखा कि कुछ आदमी तलवारों या भालों के साथ आन पड़े।

तो विश्वसनीय सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि अब की बार उन पर ख़तरनाक भय छाया और स्वप्न में भी डरते रहे और इस समय में एक अक्षर भी इस्लाम के विरुद्ध मुंह से नहीं निकाला और न किसी के पास शिकायत प्रस्तुत की कि मुझ पर यह तीसरी बार आक्रमण हुआ।

इन समस्त आक्रमणों पर ध्यानपूर्वक दृष्टि डालने से प्रत्येक पहलू से आथम साहिब आपत्तिजनक ठहर गए हैं क्योंकि यह वर्णन करने के बावजूद कि तीन आक्रमण हुए जिन में से पहला आक्रमण **सिधाए गए सांप** का आक्रमण है परन्तु आथम साहिब ने न तो आक्रमण करने वालों को पकड़ा और न कानून के अनुसार किसी थाने में रिपोर्ट लिखवाई और न किसी अदालत में नालिश की और न अमन प्राप्त करने के लिए आदालत के माध्यम से हमारा मुचलका लिखवाया और न अपराधियों के पकड़ने के लिए अंधी पुलिस ने कुछ मदद दी और न मजलिसों में इस बात की चर्चा की और न अख़बारों में इन निरन्तर तीन घटनाओं को मीआद गुज़रने से पूर्व छपवाया और

न अपराधियों का कोई हुलिया वर्णन किया और न उनके भागने के समय उनका कोई कपड़ा इत्यादि छीन लिया।

ये समस्त वे बातें है जो आथम साहिब को जो ऐक्स्ट्रा असिस्टेंट के कार्य करते हुए बूढ़े हो गए पूर्ण रूप से दोषी कर रही हैं। उनको चाहिए था कि आरोपों से बरीयत सिद्ध कराने के लिए यदि पहले नहीं हो सका तो बाद में ही नालिश कर देते और अदालत में तीन आक्रमणों का सबूत देकर एक तो झूठी भविष्यवाणी का दण्ड दिलवाते और दूसरे क़त्ल करने के लिए अग्रसर होने के दण्ड से भी खाली न छोड़ते। परन्तु वह ऐसे चुप हुए कि उनकी ओर से आवाज़ न आई।

कुछ अख़बार वालों ने भी बहुत सियापा किया परन्तु उन्होंने किसी की न सुनी। डाक्टर क्लार्क मार्टिन सर खपा-खपा कर रह गया परन्तु उन्होंने उस के उत्तर में भी दोनों हाथ कानों पर रखे। हालांकि बुद्धि न्याय और कानून के अनुसार उनका दामन इसी हालत में पवित्र हो सकता था जबकि वह अपने उन दावों को जिन पर भय की बुनियाद रखी गई थी नालिश द्वारा या जिस प्रकार चाहते सिद्ध कर दिखाते।

उनकी ये तीन हालतें कि **एक ओर** तो उन्होंने अपने इक़रार तथा अपने कार्यों एवं गतिविधियों से भविष्यवाणी के मध्य अपना नितान्त तौर पर भयभीत रहना प्रकट किया और **दूसरे** यह कि उस भय का कारण तीन आक्रमण बताए जो पूर्ण सबूत के बिना किसी बुद्धिमान के नज़दीक स्वीकार करने योग्य नहीं हैं अपितु अनुमान और बुद्धि से भी दूर हैं। और **तीसरे** यह कि इन तीन आक्रमणों तथा अनुचित आरोपों का कुछ भी सबूत नहीं दिया, न अदालत के द्वारा

न अन्य किसी तरीक़े से। ये तीनों हालतें उनको इस बात की ओर विवश करती थीं कि यदि उनके पास इन अनुचित आरोपों का कोई भी सबूत नहीं तो वह **क़सम** ही खा लेते।

अत: उनके झूठे और सच पर न होने पर **चौथा** प्रसंग यही है कि वह क़सम से भी इन्कार कर गए और उनके लिए चार हज़ार रुपया नक़द प्रस्तुत किया गया परन्तु भय के कारण उन्होंने दम न मारा।

हमारा क़सम लेने से क्या उद्देश्य था यही तो था कि जिस भय के इक़रारी होकर फिर वास्तविकता के विरुद्ध तथा अनुमान के विरुद्ध यह बहाना प्रस्तुत करते हैं कि वह डर तीन निरन्तर आक्रमणों के कारण था। यह अनुचित बहाना उन्होंने सिद्ध नहीं किया और न यह सिद्ध कर सके कि यह ख़ाकसार कोई प्रसिद्ध डाकू और ख़ूनी है जो उन से पहले भी कई ख़ून कर चुका है। इसलिए न्याय की दृष्टि से उन पर अनिवार्य था कि ऐसे अनुचित आरोपों से बाद जो क़ानून के अनुसार भी एक जघन्य अपराध का रंग रखते हैं। क़सम खाने से कदापि इन्कार न करते। यदि वास्तविक तौर पर उनके धर्म में क़सम खाने का निषेध होता तो हम समझते कि धर्म ने उनको क़सम से जो बरीयत का आधार था वंचित रखा परन्तु हमने तो अपने विज्ञापन चतुर्थ में उनकी बाइबल उनके सामने खोल कर रख दी और सिद्ध कर दिया कि उनके सामान्य बुज़ुर्ग क़सम खाते रहे हैं। यहां तक कि उनका **पोलूस रसूल** भी जिसके विवेचन और पद्धति से मुंह फेरना एक ईसाई के लिए कुफ़्र और बेईमानी में सम्मिलित है वह भी क़सम खाने से नहीं बचा सका। (देखो क्रान्तियान अध्याय-15, आयत-31)

इन क़समों के विवरण के लिए हमारा चतुर्थ विज्ञापन 27 अक्टूबर 1894 ई. पढ़ना चाहिए ताकि ज्ञात हो कि क़सम के वैध होने में हमने कितने सबूत दिए हैं, और न केवल इंजील अपितु सम्पूर्ण बाइबल के हवाले दिए हैं। परन्तु आथम साहिब ने अपनी इंजील की थोड़ी सी भी परवाह नहीं की। कारण यह कि वही आकाशीय रोब उन के हृदय पर विजयी हुआ जिसने तीन आक्रमण का दृश्य दिखलाया था। तब पादरियों को चिन्ता हुई कि आथम ने हमारे मुंह पर स्याही का धब्बा लगाया। इसलिए **डॉक्टर क्लार्क** ने सर्वथा बेईमानी का मार्ग अपना कर एक गन्दा विज्ञापन निकाला जिसका सारांश यह था कि ईसाई धर्म में क़सम खाना ऐसा ही हराम (अवैध) है जैसा कि मुसलमानों में **सुअर** का माँस खाना। परन्तु इस शर्म के शत्रु के शत्रु को थोड़ा भी इंजील और पतरस तथा पोलूस के सम्मान का ख़याल न आया और न यह सोचा कि यदि यही उदाहरण सच है तो फिर **पोलूस रसूल** को ईमानदार कहना अनुचित है जिसने सर्वप्रथम इस अपवित्र चीज़ का इस्तेमाल किया।

जिस हालत में एक मुसलमान सुअर को वैध (हलाल) समझने वाला समस्त फ़िर्क़ों की सहमति से **काफ़िर हो** जाता है और उसको खाने वाला परले दर्जे का पापी व्यभिचारी कहलाता है। तो फिर हमें **डॉक्टर क्लार्क** साहिब इस बात का अवश्य उत्तर दें कि वह अपने **हज़रत पोलूस** के बारे में इन दोनों उपाधियों में से किस उपाधि को अधिक पसन्द करते हैं।

सच्ची बात को छुपाना बेईमानों और लानातियों का काम है। क्या यह सच नहीं है? कि पोलूस ने क़सम खाई, **पतरस** ने क़सम खाई।

और **ज़बूर में लिखा है कि जो झूठा है वही क़सम नहीं खाता।**

(देखो ज़बूर अध्याय-63, आयत-11)

क्या! हम स्वीकार करें कि केवल आथम साहिब ही क़सम खाने से बचे और दूसरे समस्त बुज़ुर्ग ईसाई क़सम का सुअर खाते रहे और अब भी इस **क़सम के सुअर** खाने के अतिरिक्त कोई उच्च श्रेणी की नौकरी जो प्रतिज्ञा करने वाले पदाधिकारियों को मिलती है किसी ईसाई को नहीं मिल सकती है।

और मज़ेदार यह कि आथम साहिब को दोबारा अदालत में क़सम खाना सिद्ध हो चुका है यदि वह इन्कार करें तो हम नक़ल लेकर दिखला दें।

सच तो यह है कि इन ईसाइयों में से बहुत कम ही कोई ऐसा हो जिसको क़सम खाने का संयोग न हुआ हो। अपितु अंग्रेज़ी कानून ने क़सम खाना ईसाइयों के एक विशेष अधिकार रखा है और दूसरों के लिए नेक इक़रार।

अब हम न्यायधीशों से पूछते हैं कि जिन लोगों ने क़सम से बचने के लिए जानबूझ कर अपने जीवन चरित्र को छुपाया और वे जानते थे कि इस से पूर्व हम कई बार क़समें खा चुके हैं परन्तु जान बूझ कर उन क़समों को गुप्त रखा और एक अत्यन्त घृणित झूठ बोला और कहा कि क़सम हमारे धर्म में ऐसा ही दुष्कर्म है जैसे मुसलमानों में सुअर। और अपने बुज़ुर्गों को अपनी जीभ से पापी दुराचारी ठहरा दिया। क्या उनके इस तरीके से अब तक सिद्ध न हुआ कि यदि वे स्वयं को सच पर जानते तो इस अपमान और बदनामी को कदापि स्वीकार न करते।

तो यह **पांचवां प्रसंग** है कि इन लोगों ने एक सच्चाई को छुपाने के लिए अपने **पोलूस रसूल** को एक ऐसे आदमी से उपमा दी कि जो मुसलमान कहला कर फिर सुअर खाए। इसी बात से एक बुद्धिमान समझ सकता है कि पर्दे के पीछे आथम और उसके दोस्तों को किस बात का रोब खा गया कि उन्होंने व्यर्थ बहाने बाज़ियों और बदनामी वाली पद्धति को अपनाया परन्तु आथम क़सम खाने से ऐसा भयभीत हुआ कि जैसे वह खा जाने वाला भेड़िया है।

बुद्धिमानों को चाहिए कि इन बातों को बार-बार मस्तिष्क में लाएं कि आथम ने पहले क्योंकर रो-रो कर यह इक़रार किया कि मैं भविष्यवाणी की मीआद में अवश्य भयभीत रहा और फिर सोचें कि जिस भविष्यवाणी को व्यर्थ समझा गया था उससे इतना भयभीत होना क्या मायने रखता था। मनुष्य बहुत सी व्यर्थ बातें सुनता है परन्तु उनकी कुछ भी परवाह नहीं करता। फिर यदि मान भी लें कि अमृतसर में किसी शिक्षित सांप ने उस पर आक्रमण किया था तो इतनी बदहवासी और आतुरता दिखाना और शहर-शहर फिरना क्या आवश्यक था कोई कानूनी उपाय किया होता जिस से अमनपूर्वक अमृतसर में बैठे रहते। क्या अमृतसर की पुलिस अपर्याप्त थी या समस्त कानूनी उपचार बंद थे जो इतने खर्च करके धूप की तीव्रता के दिनों में वृद्धावस्था में अपनी आरामगाह को छोड़ा और लुत्फ़ यह कि वह छोड़ना भी बेफ़ायदा रहा। अमृतसर में सांप दिखाई दिया लुधियाना में भालों वाले दिखाई दिए, फ़ीरोज़पुर में तलवार के साथ आक्रमण हुआ। ये बयान बहुत ही ध्यान देने योग्य हैं।

दर्शकगण! इन तीन आक्रमणों को उचटती दृष्टि से न देखें

और ख़ूब सोचें। क्या वास्तव में सच है कि पहला दिखाई देने वाला वास्तव में एक सिधाया गया सांप था जिस पर किसी का डंडा चल न सका और दो पिछली बार में दिखाई दिए वे हमारी जमाअत के अनुभवी योद्धा थे जिन को किसी अवसर पर आथम साहिब पकड़ न सके और न उनके दामादों का उन पर हाथ पहुँच सका, न पुलिस के योग्य कान्स्टेबल उन के मुकाबले का साहस कर सके। फिर विचित्र से विचित्र यह कि ये लोग अवैध हथियारों के साथ कई बार रेल पर सवार हुए, बाज़ारों में होकर निकले, आथम साहिब ने इहाते में इधर-उधर फिरते रहे परन्तु आथम के अतिरिक्त कोई भी उन्हें देख न सका। क्या इन समस्त प्रसंगों से सिद्ध नहीं होता कि वास्तव में यह सब रूहानी दृश्य था जिसने आथम साहिब के हृदय को सच की ओर रुजू दिलाया या उन का हृदय भय से भर गया और मुंह पर मुहर लग गयी। उनका कर्तव्य था कि पहले आक्रमण में ही थाने में रिपोर्ट करते, सरकार को सूचना देते और हुलिया लिखवाते और सूरत, शक्ल, वर्दी तथा समस्त क़रीनों से हाकिमों को सूचित करते ताकि सरकार विज्ञापन देकर ऐसे बदमाशों को गिरफ़्तार करती और ऐसे मंदबुद्धि अपराधियों को आवश्यक दण्ड का स्वाद चखाती और कम से कम यह तो चाहिए था कि वकीलों के मशवरे से एक प्रार्थना पत्र देकर अपराधियों को दण्ड दिलाते या सावधानी के तौर पर इस ख़ाकसार से इस विषय का मुचलका लिखवाते कि यदि आथम भविष्यवाणी की मीआद में मारा गया तो यह जान-बूझ कर क़त्ल तुम्हारे ज़िम्मे लगाया जाएगा। क्योंकि जो व्यक्ति पहले इनकी मौत की भविष्यवाणी कर चुका और फिर उसकी जमाअत की ओर से क़त्ल करने के लिए

तीन आक्रमण भी हुए क्या ऐसे व्यक्ति का मुचलका लेने से सरकार को कुछ संकोच हो सकता है।

क्या यह आश्चर्य की बात नहीं कि आथम साहिब पन्द्रह माह तक एक जलते हुए तंदूर में पड़े रहे और बार-बार भयानक आक्रमणों से कुचले गए परन्तु उन्होंने किसी स्थान पर कानून की दृष्टि से छान-बीन नहीं कराई। अमृतसर से सांप के आक्रमण से चुपके से ही निकल आए। फिर लुधियाना पहुंचे और साथ ही आक्रमण वाले भी पहुँच गए और मारने में कुछ भी कसर न रखी। तब भी आथम साहिब ने सरकार में जाकर सियापा न किया कि ये दुश्मन मेरे क़त्ल पर तत्पर हैं। मेरी कोठी पर हथियारबंद होकर आए सरकार उनका मुचलका ले और मुझे इन की बुराई से बचा ले। अपितु उन को चाहिए था कि सिधाए गए सांप के आक्रमण पर दुहाई देते कि लोगो देखो भविष्यवाणी की वास्तविकता मालूम हुई।

अब हे हमारे दर्शकगण! हे अख़बारों के सम्पादको! हे पत्रिकाओं को प्रकाशित करने वालो! आप लोगों ने आथम साहिब की हमदर्दी तो बहुत की अपितु कुछ ने लिखा कि आथम साहिब प्रजा पर बहुत ही उपकार करेंगे यदि ऐसे झूठे पर नालिश करके उसे दण्ड दिलाएंगे। परन्तु अब आंख खोल कर देखो कि शक्तिशाली सन्दर्भ किस को झूठा सिद्ध करते हैं।

हम तुम से इस्लाम की हमदर्दी नहीं चाहते। हम तुम को यह आरोप नहीं देते कि मुसलमानों की सन्तान कहला कर फिर पादरियों की अकारण सहायता क्यों की। क्योंकि यह बात कहने वाला और पूछने वाला एक ही है जो मांग के दिन अत्याचारी को दण्ड दिए

बिना नहीं छोड़ेगा।

हम तुम्हारी गालियों और लानतों से भी क्रोधित नहीं क्योंकि पहले ईमानदारों की अपेक्षा यह बहुत थोड़ा दुःख है जो हमें तुम से पहुँचा है परन्तु यदि हमें अफ़सोस है तो केवल यही कि तुम ने धर्म की सच्ची सहायता को भी छोड़ा और पादरियों की हाँ के साथ हाँ मिलाई, परन्तु अन्तिम परिणाम तुम्हारे लिए उस लज्जा का भाग हुआ जिसे दूसरे शब्दों में خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ कहते हैं। इस बात का हमें भी अफ़सोस है कि इसके बावजूद कि धर्म को तुम ने इस प्रकार फेंक दिया कि जिस प्रकार सब बेकार तिनका फेंका जाता है परन्तु फिर भी तुम किसी ऐसी प्रशंसा के योग्य न ठहरे जो किसी बुद्धिमान गहरी राय वाले के बारे में हो सकती है अपितु वह शर्म और शर्मिन्दगी उठाई जो हमेशा जल्दबाज़ लोग उठाया करते हैं। वास्ताव में जो व्यक्ति नफ़्स के जोश में आकर या जल्दबाज़ी के कारण अल्लाह और रसूल की कुछ भी परवाह नहीं करता उसे ऐसे दिन देखने पड़ते हैं।

क्या कभी तुम ने सुना कि किसी ऐसे मुबाहसे में कि जिस की सहायता में ईसाई धर्म को कोई चोट पहुंचती हो या किसी व्यक्ति की नज़र में इस धर्म का उन्मूलन होता हो, कोई पादरी तुम्हारे साथ हो गया हो अपितु वह तो सैकड़ों आन्तरिक मतभेदों के बावजूद अपनी हवा निकलने नहीं देते। फिर तुम पर अफ़सोस कि तुम ने कुछ स्वार्थी मौलवियों के पीछे लग कर एक धार्मिक मामले में पादरियों की वह सहायता की और सत्यनिष्ठों को वे गालियां दीं जिस का उदाहरण किसी क़ौम में नहीं पाया जाता। तो अब भी मैं नसीहत करता हूं कि तौबः करो और पवित्र हृदय और निःस्वार्थ नज़र के

साथ इस भविष्यवाणी को देखो और समस्त मामलों को इकट्‌ठी नज़र से कल्पना में लाकर वह सच्ची राय व्यक्त करो जो तुम्हारी पहली जल्दबाज़ियों का कफ़्फ़ार: हो जाए। निश्चित समझो कि इस्लाम धर्म ही सच्चा है और प्रत्येक इन्सान को अपने उन समस्त विचारों का हिसाब देना पड़ेगा जिन को वह रद्‌दी और अपवित्र पाकर फिर भी अपने सीने से बाहर नहीं फेंकता और कंजूसी तथा द्वेष से अपनी तबियत को अलग नहीं करता।

अत: उठो और जागो और फिर दोबारा एक सत्य का अभिलाषी और सोचने वाला दिल लेकर आथम वाली भविष्यवाणी पर दृष्टि डालो। भविष्यवाणी में कोई भी अन्धकार नहीं था। तुम्हारा अपना ही अन्धकार और मोटी बुद्धि तथा जल्दबाज़ी ने एक अन्धकार को जन्म दिया और वह स्पष्ट शर्त तुम्हारी आँखों से ओझल हो गई जो अनादि दूरदर्शी ख़ुदा ने तुम्हारी परीक्षा के लिए पहले ही इल्हामी इबारत में सम्मिलित की थी। यह कार्य भी उसी स्वच्छन्द दूरदर्शी ख़ुदा का है ताकि वह तुम्हें परखे और आज़माए तथा तुम पर प्रकट करे कि तुम विचार, संयम और इस्लामी भाईचारे से कितने दूर जा पड़े। भाइयो शीघ्र तौब: करो ताकि तबाह न हो जाओ क्योंकि कोई कर्म बुरा नहीं जिस पर पकड़ न होगी और कोई बेईमानी नहीं जिसके कारण इन्सान पकड़ा न जाए। जिसने किसी कंजूसी के कारण अपना धर्म ख़राब कर लिया और किसी पक्षपात के कारण सच को छोड़ा वह कीड़ा है न कि इन्सान, और दरिन्दा है न कि आदमी। परन्तु नेक आदमी एक पवित्र विचार के साथ सोचता है और उसका कलाम हिकमत और सच्चाई के साथ होता है न कि ठट्‌ठे और हंसी के रंग में तथा वह

सच्चाई और इन्साफ़ के पवित्र आकर्षण से बोलता है न कि प्रकोप और क्रोध के आकर्षण से। इसलिए ख़ुदा उस की सहायता करता है और रूहुलक़ुदुस उसके हृदय पर प्रकाश डालता है। परन्तु अपवित्र हृदय और गन्दी तबियत वाला सच्चाई को निकालने के लिए कुछ भी प्रयास नहीं करता और एक धोखा जो पहले दिन से ही उसे लग जाता है उसी का अनुकरण करता चला जाता है और फिर पक्षपात और उलटी सीधी बात करने के कारण ख़ुदा तआला उस के दिल का प्रकाश छीन लेता है और उसका पिछला हाल पहले से भी बहुत बुरा हो जाता है।

परन्तु नेक स्वभाव मनुष्य अपनी राय के बदलने से कदापि नहीं डरता। जब देखता है कि एक सच्चाई को झुठलाने में मुझ से ग़लती हुई तो उसका शरीर काँप जाता है और आँखों से आंसू भर आते हैं तथा सच्चाई के खून से उस अपराधी से अधिक डरता है जिसने एक निर्दोष और मासूम बच्चे को अकारण क़त्ल कर दिया हो। तो ख़ुदा जो दयालु एवं कृपालु है उसे स्वीकार कर लेता है और उस की श्रेष्ठता हृदयों में डाल देता है।

यही कारण है कि जब हम देखते हैं कि मज्लिस में एक व्यक्ति बहादुर हृदय के साथ खड़ा हो गया और ऊँचे स्वर में बोला कि सज्जनो में अमुक मामले में ग़लती पर था और जो कुछ मैंने एक समय तक बहसें कीं या जो कुछ मैंने विरोध व्यक्त किया वह सब ग़लत बात थी। अब मैं उस से केवल ख़ुदा के लिए रुजू करता हूं। ऐसे व्यक्ति की एक धाक हृदयों पर छा जाती है और वली होने का प्रकाश उसके चेहरे पर दिखाई देता है और हृदय बोल उठता है कि

यह व्यक्ति संयमी और सम्मान योग्य है।

ख़ुदा फ़रमाता है कि मैं उनसे प्रेम करता हूं कि जो गुनाह और ग़लती का मार्ग छोड़ कर सच्चाई की ओर क़दम उठाते हैं। अतः जिस से ख़ुदा प्रेम करे तो उसके समस्त नेक बन्दे उस से प्रेम करेंगे क्योंकि नेक रूहों का प्रेम ख़ुदा के प्रेम के अधीन है। तो मुबारक वह जो ख़ुदा तआला की प्रसन्नता के मार्ग ढूंढे और ज़ैद तथा बकर की बक-बक की कुछ परवाह न रखे।

अब मेरे दोस्तो थोड़ी नज़र उठा कर देखो और अपनी अन्तर्रात्मा और नर्म हृदय से फ़तवा लो और तनिक नज़र और विचार को होशियारी और गंभीरतापूर्वक दौड़ा कर देखो क्या आथम का तरीका और आचरण उसकी सच्चाई को बता रहा है? क्या तुम्हारे हृदय इन बातों को स्वीकार करते हैं कि आथम पर अवश्य अमृतसर में किसी शिक्षित सांप ने आक्रमण किया था और अवश्य हमारी जमाअत के कुछ लोग तलवारों तथा भालों के साथ लुधियाना और फ़ीरोज़पुर में उसकी कोठी में क़त्ल करने के लिए जा घुसे थे।

क्या आप लोगों की रूहें इस बात को स्वीकार करती हैं कि इस धार्मिक मुक़द्दमे के बावजूद जिस के आधार पर यह मुबाहसः आरम्भ हुआ था अर्थात् इस्माईल नामक एक व्यक्ति का ईसाई होने से रुक जाना और इस भड़कने से ईसाइयों का मुबाहसः करना और फिर भविष्यवाणी की सच्चाई मिटाने के लिए ये झूठी तावीलें करना कि डॉक्टर की अटल राय है कि छः महीने के अन्दर आथम मर जाएगा ऐसे लोग जिन्होंने धार्मिक हार-जीत के विचार से पहले ही झूठी तावीलें आरम्भ कर दीं और विजय के लोलुप रहे और निश्चित

तौर पर तीन आक्रमण हमारी जमाअत की ओर से देखे और आक्रमण भी वे जो ऐसे मनुष्य के क़त्ल करने के इरादे से हों जो ईसाई पार्टी का सर हो। और फिर ये ईसाई महानुभाव खामोश रहें, न सरकार में उन आक्रमणों की शिकायत ले जाएं और न थाने में रिपोर्ट करें और न अदालत में हमारा मुचलका दाख़िल कराएं और न मीआद के अन्दर इस घटना का अख़बारों में विज्ञापन दें और न हमारे चार हज़ार रुपए नक़द प्रस्तुत करने के बावजूद क़सम खाएं और न चार हज़ार रुपए लेकर हमें दण्ड दें। सज्जनो आप ख़ुदा के लिए सोचो कि अन्ततः मर जाना और इस नीच संसार को छोड़ जाना है और थोड़ा विचार करो कि जिस व्यक्ति पर यह अत्याचार हो कि मृत्यु की खबर सुना कर अकारण दिल दुखाया जाए और फिर उसी दिल दुखाने पर बस न हो अपितु उस पर निरन्तर तीन आक्रमण भी हों और मामला धार्मिक हो जिसमें स्वाभाविक तौर पर पक्षपात बढ़ जाते हैं। क्या ऐसी स्थिति में आप स्वीकार कर लेंगे कि यह सब कुछ घटित हो। यदि आथम और उसके दोस्तों ने न चाहा कि बुराई के मुकाबले पर बुराई करें फिर सज्जनो यह भी सोचो कि संसार में कोई दावा सबूत के बिना स्वीकार करने योग्य नहीं होता। तो ऐसा दावा जो अनुमान के विरुद्ध तथा अनुचित हो और जिस के झूठ गढ़ने के लिए ईसाइयों को आवश्यकताएं पड़ी थीं वह सबूत प्रस्तुत करने के बिना क्यों स्वीकार किया जाता है।

आथम साहिब नालिश नहीं करते कि यह सौभाग्य की मांग है क़सम नहीं खाते कि हमारे धर्म में क़सम ऐसी है जैसे मुसलमानों में सुअर खाना। कोई और सबूत नहीं देते कि अब हम लड़ना और

झगड़ना नहीं चाहते। तो क्या अब ये समस्त बिना सबूत बातें आथम साहिब की स्वीकार कर लोगे और क्या आप की यह राय है कि हमारी सब बातें झूठी और आथम की ये सारी कहानियां सच्ची हैं। यदि यही बात है तो हम आप लोगों से विमुख होते हैं जब तक कि वह दिन आए कि अर्श के रब्ब के सामने हम सब लोग खड़े होंगे। साहिबो में सच-सच कहता हूं कि यदि यह झगड़ा सांसारिक झगड़ों की तरह चीफ़ कोर्ट या हाई कोर्ट की अदालत में प्रस्तुत होता तो अन्ततः ध्यानपूर्वक देखे जाने के पश्चात् हमारे ही पक्ष में निर्णय होता।

प्रियजनो! आप लोगों पर आवश्यक था कि उस ईमान के प्रकाश से काम लेकर जो हज़रत सय्यिदिना मौलाना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने प्रत्येक सच्चे ईमानदार को ख़ुदा तआला की ओर से प्रदान किया है। आथम की उस योजना पर जो मानो उस पर तीन आक्रमण हुए ध्यानपूर्वक दृष्टि डालते और उसे दोषी करते कि जब तक वह सिधाया गया सांप तथा हथियारबंद क़ातिलों का पता न लगा दे या अदालत में नालिश न करे या क़सम न खाए तब तक न्याय के क़ानून की दृष्टि से झूठा और सच्चाई छुपाने वाला है।

हमारी जमाअत के लिए तो तीन आक्रमणों का आरोप ईमान और विश्वास में वृद्धि और आथम के झूठे होने का स्पष्ट सबूत है। क्योंकि हमारी जमाअत में से प्रत्येक व्यक्ति हार्दिक विश्वास से जानता है कि ऐसे आक्रमणों की मुझे शिक्षा नहीं दी गई और न ऐसा गन्दा मशवरा कभी इस जमाअत में हुआ। हम अपनी सम्पूर्ण जमाअत को एक-एक करके इस समय संबोधित करते हैं कि क्या उनको ऐसी सलाह दी गई कि तुम कोई ज़हरीला या काला सांप लेकर और उसे

भली-भांति शिक्षा देकर आथम को डसने के लिए उसकी कोठी में छोड़ दो। यदि वहां अवसर न पाओ तो फिर लुधियाना में जाकर और यदि वहाँ भी अवसर न मिले तो फिर फ़ीरोज़पुर में जाकर काम पूरा कर दो।

हम फिर कहते हैं यदि किसी को हमने कभी ऐसा मशवरा दिया है तो बड़ी बेईमानी होगी कि वह उसे प्रकट न करे कि मुर्शिद (पीरों) पर मुरीदों का उसी समय सच्चा विश्वास रह सकता है कि जब तक उसको ईमानदार और सच्चा तथा सच कहने बोलने वाला विश्वास करें। झूठा और ठग तथा षड्यंत्र करने वाला होना उसका सिद्ध न हो और जब कि यह बात है तो हमारे मुरीदों में से प्रत्येक व्यक्ति अपने दिल में सोचे कि उनमें से क्या कोई हमारे कहने से या स्वयं आथम पर आक्रमण करने के लिए अमृतसर, लुधियाना और फ़ीरोज़पुर गया था। स्पष्ट है कि सब का यही उत्तर होगा कि मैं नहीं गया और न ऐसी गन्दी शिक्षा मुझे दी गयी और यह बात भी स्पष्ट है कि यदि इस छोटी सी जमाअत में कोई ऐसा गन्दा मशवरा होता तो जमाअत के कुल या अधिक लोगों को इसकी सूचना अवश्य होती। विशेष तौर पर जबकि इस जमाअत के विद्वान लोग यहां एकत्र रहे हैं और कभी सौ के लगभग या अधिक होते हैं वे तो अवश्य इस पर्दे की बात को पा जाते और तौबः पर तौबः करते कि हमने इस मक्कार आदमी के हाथ में हाथ देकर अपने ईमान को नष्ट किया। भविष्यवाणी ख़ुदा तआला की ओर से बताई और अब कहता है कोई तुम में से आथम को क़त्ल कर दे ताकि किसी प्रकार भविष्यवाणी पूरी हो। इस समय हम अपने विद्वान दोस्त मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब को जिन्होंने

अपने देश से हिजरत करके कई वर्ष से परिवार सहित मेरे पास और मेरे मकान के एक भाग में स्थायी निवास ग्रहण कर लिया है तथा दोस्तों के प्रत्येक नेक और पवित्र मशवरे में सभापति हैं और केवल सुधारणा के कारण अपनी जान और माल से उपस्थित हैं सम्बोधित करके पूछते हैं कि क्या कभी ऐसे गंदे मशवरे की आप से चर्चा हुई।

इसी प्रकार हम अपने समस्त दोस्तों को सम्बोधित करके पूछते हैं कि क्या किसी ऐसे बेहूदा मशवरे में आप लोग भी सम्मिलित हुए या आप लोगों में से कोई साहिब आथम साहिब के क़त्ल करने के लिए भेजा गया। निस्सन्देह आप लोगों के दिल बोल उठेंगे कि हमारी ओर इन बातों को सम्बद्ध करना सर्वथा गढ़ा हुआ झूठ है और निस्सन्देह इस निराधार षड्यंत्र की कल्पना से आप लोगों के ईमान में वृद्धि होती परन्तु अन्य को अजनबी होने के कारण यह अटल विश्वास प्राप्त नहीं।

परन्तु अफ़सोस तो यह है कि वे इन शक्तिशाली क़रीनों से बचते हैं जो स्पष्ट तौर पर आथम को दोषी ठहराते हैं। वे नहीं सोचते कि जिस हालत में आथम ने अपने भय की बुनियाद तीन आक्रमणों पर रखी और इस बात से इन्कार किया कि वह भय और रोना-धोना इस्लाम के रोब से था तो उन तीन आक्रमणों का सबूत भी तो प्रस्तुत करना चाहिए था, क्योंकि भय को भविष्यवाणी की ओर सम्बद्ध करने के समय तो क़रीने मौजूद हैं। कारण यह कि भविष्यवाणी बहुत ज़ोर से की गई थी और न केवल आथम अपितु इसी समय उस मज्लिस के समस्त ईसाइयों पर उस का प्रभाव हो गया था और प्रस्तावना के तौर पर उसी दम कहना आरम्भ कर दिया था कि आथम के मरने की तो एक डॉक्टर ने भी ख़बर दे रखी है कि छः माह तक मर जाएगा।

स्पष्ट है कि ये समस्त बातें भविष्यवाणी का रोब स्वीकार करने के कारण मुंह से निकली थीं और आथम साहिब के दिल पर एक भारी असर डालने वाला काम कर रहा था और ये समस्त क्रम चाहते थे कि आथम साहिब से वे हरकतें जारी हों जो भय की तीव्रता के समय जारी हुआ करती हैं और वे दृश्य उनको दिखाई दें जो भय की तीव्रता के समय दिखाई दिया करते हैं परन्तु उन्होंने इन्सानी आक्रमणों का क्या सबूत दिया जबकि अब उनके भय की बुनियाद ठहरा दिए गए हैं।

फिर जिस हालत में कुछ भी सबूत नहीं दिया तो क्या यह अनुचित मांग थी कि वह अपनी बरीयत प्रकट करने के लिए क़सम खा लेते। तो अब **वे दुनिया के पुजारी मौलवी जो ईसाइयत के साथ हाँ में हाँ मिला रहे हैं** हमें उत्तर दें कि उन्होंने क्यों हमारी शत्रुता के लिए अपना मुंह काला किया। क्या यही मुंह कल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिखाएंगे जिन के धर्म को झुठलाने के लिए वे अकारण सम्मिलित हुए। क्या वे क़सम खा सकते हैं कि उनके नज़दीक आथम ही सच्चा है ऐसे युद्ध की मांग में आथम का क़सम खाना एक प्रकार की मौत थी जो उस पर आ गई और वह बय्यिन: के साथ निस्सन्देह मर गया और जो सबूत का भार उस के दायित्व में था वह उस से भारमुक्त न हो सका और शारीरिक मृत्यु भी धृष्टता के बाद टल नहीं सकती।

لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ (अल अनआम-35)

अफ़सोस कि हमारे कुछ मौलवियों और उनके नालायक चेलों ने जो नाम के मुसलमान थे इस जगह अपनी स्वाभाविक नीचता से बार-बार सच्चाई को झुठलाया और इस्लाम के विरोध में ये बेरहम

(निर्दयी) और दुष्ट मौलवी ईसाइयों से कुछ कम न रहे और बहुत ही ज़ोर लगाया कि किसी प्रकार इस्लाम को और जाहिल मुसलमान जो चौपायों की तरह थे उनके दिलों में जमा दिया कि इस व्यक्ति अर्थात् इस खाकसार ने इस्लाम को बदनाम किया और पराजय दिलाई।

दर्शकगण ! अब ये समस्त मुकद्दमें और घटनाएँ आप लोगों की नज़र के सामने हैं हम ये नहीं कहते कि केवल धार्मिक सहायता और अनुचित पक्षपात से हमें सच्चा ठहरा दो और ईसाइयों तथा उनके सम्प्रकृति नाम (अधूरे) ईसाई मौलवियों को झूठा ठहरा दो अपितु मौजूदा मुक़द्दमों पर एक गहरी दृष्टि डालो फिर उनसे वह परिणाम निकालो जो बुद्धि और न्याय के पूर्ण इस्तेमाल के बाद निकलना चाहिए। हम इस बात को स्वीकार करते और मानते हैं कि यदि आथम साहिब इस भविष्यवाणी के बाद अपने स्थान पर दृढ़तापूर्वक बैठे रहते और अपने जगह-जगह पागलों की तरह फिरने से अपनी बदहवासी और भयभीत हालत को प्रकट न करते और ये बातें मीआद के बाद मुंह पर न लाते कि इस जमाअत के कुछ लोग तीन बार तीन विभिन्न शहरों में भालों और तलवारों तथा सांपों के साथ मेरी कोठी के प्रांगण में घुस आये और अपने मुंह से रो-रो कर यह इक़रार न करते कि वास्तव में मीआद के अन्दर मैं डरता रहा और फिर क़सम पर बुलाने के लिए अविलम्ब उपस्थित हो जाते तो निस्सन्देह हम प्रत्येक विरोधी और मित्र की दृष्टि में झूठे ठहरते और हमारा अन्तिम इल्हाम जो रुजू की शर्त पूर्ण होने के कारण ख़ुदा का अज़ाब टल गया एक बहाना सा या ग़लत तवील सब को दिखाई देती।

प्रिय दर्शकगण! आप लोग जानते हैं कि इस भविष्यवाणी में

स्पष्ट तौर पर यह शर्त मौजूद थी कि इस हालत में अज़ाब आएगा कि सच्चाई की ओर रुजू न करे। और मैं इस निबंध में लिख चुका हूं कि शब्द रुजू खुले-खुले इस्लाम लाने का समतुल्य और समपल्ला: नहीं अपितु कम योग्यता रखने वाला आदमी भी जानता है कि कभी यह शब्द खुले-खुले इस्लाम पर बोला जा सकता है और कभी जब मनुष्य गुप्त तौर पर कुछ अपना सुधार करे तब भी वह कह सकता है कि मैंने सच्चाई की ओर रुजू किया और भविष्यवाणी में यही नियम हमेशा से है कि यदि कोई शब्द दो अर्थों का सन्देह रखता हो तो भविष्यवाणी के अंजाम के बाद जो अर्थ मौजूद घटनाओं से प्रकट हों वही लिए जाएँगे।

अत: घटनाएँ प्रकट कर रही हैं कि आथम साहिब ने गुप्त तौर पर इस्लाम का भय अपने दिल पर ग़ालिब (हावी) किया और ईसाई पक्षपात के अन्दर ही अन्दर सुधार किया और अन्दर ही अन्दर सच्चाई की ओर रुजू किया। इसलिए वह शर्त पूरी हो गई जो अज़ाब के न उतरने के लिए बतौर रोक के थी। क्या आवश्यक था कि ख़ुदा अपनी शर्तों का ध्यान रखता।

चूंकि हमारे उस इल्हाम में स्पष्ट एवं साफ़ शर्त थी कि सच्चाई की ओर रुजू करने से अज़ाब टल जाएगा और आथम की कथित उपरोक्त गतिविधियों ने रुजू के अर्थ को पूर्ण कर दिया। इसलिए भविष्यवाणी सच्चाई के साथ पूरी हो गई।

आथम का यह बयान था कि मैं डरता तो अवश्य रहा परन्तु भविष्यवाणी की सच्चाई से नहीं अपितु मुझे बार-बार ख़ूनी फ़रिश्ते, भालों और तलवारों के साथ दिखाई देते रहे। अत: यह ख़ुदा तआला

का फ़ज़्ल (कृपा) है कि डर का साफ़ इक़रार आथम के मुंह से निकल गया। परन्तु आथम ने इस बात का कुछ भी सबूत नहीं दिया कि हमारी जमाअत ने वास्तव में भालों, तलवारों और साँपों के साथ तीन बार उस पर आक्रमण किया और भय करने का दूसरा पहलू इसी बात पर आधारित था कि आथम विश्वसनीय गवाहियों से इस बात का सबूत देता कि हमारी जमाअत का अमुक आदमी भालों और तलवारों के साथ तीन शहरों में उसकी कोठी पर पहुँचा था या सरकार द्वारा इस बात को सिद्ध करता और हम पर इस बारे में नालिश करता। परन्तु आथम इस सबूत के देने से असमर्थ रहा। अपितु हम ने सुना है कि उसके कुछ दोस्तों ने भी कहा कि भय के प्रभुत्व के कारण कुछ अपने ही ख़याल दिखाई दिए होंगे जो सांप या सवारों अथवा पैदलों की शक्ल पर दिखाई दिए। अन्यथा तीन बार तीन विभिन्न स्थानों में दिखाई देना और पकड़ा न जाना अपितु कुछ भी पता न लगना और फिर हर बार केवल आथम को ही दिखाई देना एक ऐसी बात है जिसे सद्बुद्धि नहीं मान सकती। ये तो वे बातें हैं जो उनके कुछ सहधर्मी और घर के भेदी ही अपनी मजलिसों में वर्णन करते और आथम साहिब के डरों को उपहासों में उड़ाते हैं। अपितु इस से बढ़कर कुछ अन्य खबरें फ़ीरोज़पुर के एक कठिन कार्य की रिवायत से प्रसिद्ध हुईं और लाहौर में फैल गईं परन्तु इस समय हम दर्शकों के सामने केवल यह प्रस्तुत करना चाहते हैं कि आथम ने अपना भयभीत होना वर्णन करके अपितु अपने कार्यों तथा गतिविधियों से अपनी बदहवासी दिखा कर फिर यह सिद्ध न किया कि वे तीन आक्रमण जिन के अनुसार वह अपना भयभीत होना वर्णन करते हैं कभी हमारी ओर से उन पर

हुए भी थे? और जब वह सिद्ध न कर सके अपितु यह भी सिद्ध न कर सके कि ऐसे दुष्कर्मों की गन्दी आदतें कभी इस से पूर्व भी हम से प्रकटन में आई थीं तो वह डरना भविष्यवाणी के प्रभाव की ओर सम्बद्ध होगा। क्योंकि भविष्यवाणी जिस शक्ति और कठोरता के साथ की गई थी ईसाई ईमान जो मनुष्य को ख़ुदा बनाता है उसके सामने कदापि नहीं ठहर सकता। ख़ुदा तआला अच्छी तरह जानता है कि वह भविष्यवाणी की श्रेष्ठता से ही डरा और हमारी जमाअत में से कोई भालेधारी और तलवार चलाने वाला उसकी कोठी पर कदापि नहीं पहुँचा। तो चूंकि डरना स्वयं उसके इक़रार और कथन एवं कर्म से सिद्ध और ऐसी भयंकर रोब वाली भविष्यवाणी से किसी मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) सृष्टि के पुजारी का डरना अनुमान के अनुकूल भी है। तो यह बहाना कि हमारी जमाअत के तीन आक्रमण भालों, तलवारों और साँपों के साथ उस पर हुए सर्वथा बेफ़ायदा झूठ है जिसे आथम लेशमात्र भी सिद्ध नहीं कर सका और जब हम ने आथम के ही लाभ के लिए यह सबूत क़सम के द्वारा उस से लेना चाहा तो एक दूसरा झूठ बोलकर कि हमारे धर्म में क़सम खाना कदापि वैध नहीं इन्कार का मार्ग अपनाया। अत: न उसने नालिश के द्वारा जिसका उसको उसके बयान के अनुसार अधिकार पहुँचता था डर का आधार अर्थात् तीन आक्रमणों को सिद्ध किया और न कुछ गवाहों द्वारा इस आधार को पुख़्ता सबूत तक पहुंचाया और न हमारी क़सम की विनती से जो सर्वथा उसी की सच्चाई प्रकट करने के लिए थी चार हज़ार रुपए प्रस्तुत करने के बावजूद कुछ भी ध्यान दिया।

तो अब हे ईमानदारो! हे न्यायवानो! हे ख़ुदा से डरने वाले

बन्दो! हे सद्बुद्धि वालो! थोड़ा सोचो कि क्या वह इस सबूत के भार से भारमुक्त हो सका जिस के नीचे वह अब तक दबा हुआ है? क्या उस भय का इक़रार करके जो हमारी शर्त का समर्थक था और इस बात की ज़िम्मेदारी को पूरा कर सका कि वह भय उन आक्रमणों के कारण था जो उस पर आने आरंभ हो गए थे। फिर प्रियजनो! क्या अब तक वह शर्त पूरी न हुई जिसमें नर्म शब्दों में सच की ओर रुजू की शर्त थी। खुले-खुले इस्लाम लाने की तो चर्चा न थी। हे सच्चाई के दोस्तो! क्या इन बातों से कुछ भी परिणाम न निकला कि आथम ने अपने कथन और कर्म से भयभीत होना व्यक्त किया और जो भय का आधार स्थापित किया था अर्थात् हमारी जमाअत के तीन आक्रमण उनको वह सिद्ध न कर सका, न नालिश के द्वारा, न गवाही से, न क़सम खाने से। अच्छा था कि शेख़ बटालवी या उसके दोस्त हिन्दू लड़के लुधियानवी को जो निष्ठुरता से ईसाइयत के क़रीब-क़रीब जा पहुँचे हैं अपने मकान पर बैठा रखता और जब सिधाया गया सांप उसके डसने को या भालों अथवा तलवारों वाले उसके क़त्ल करने को उस पर आक्रमणकारी होते तो उन दोनों को दिखा देता ताकि इस दुर्भाग्यशाली समुदाय का ईमान ईसाइयों की सहायता में मुफ़्त में व्यर्थ न जाता और गर्व के साथ ऐसे अशुभ मकानों में बैठकर क़सम के साथ कह सकते कि वास्तव में इस मक्कार व्यक्ति अर्थात इस ख़ाकसार ने इस्लाम को अपमान और पराजय दिलाई और हम स्वयं अपनी आँखों से देख आए हैं कि एक शिक्षा प्राप्त सांप जो उनकी जमाअत ने छोड़ा था आथम को काटने के लिए निस्सन्देह उसकी कोठी में घुस गया था। यदि हम न होते तो वह अवश्य उसे

निगल ही जाता। हमने आधी ईसाइयत की दृष्टि से बिरादर आथम को बचा लिया ताकि कुछ तो बिरादरी का अधिकार अदा हो। फिर हमने यह भी देखा कि मौलवी हकीम नूरुद्दीन और मौलवी सय्यद मुहम्मद अहसन अमरोही और हकीम फ़ज़्लुद्दीन साहिब और शेख़ रहमतुल्लाह सौदागर और मुंशी ग़ुलाम क़ादिर साहिब और मौलवी अब्दुल करीम साहिब सियालकोटी, हाजी सेठ अब्दुर्रहमान साहिब ताजिर मद्रासी और मौलवी हसन अली साहिब भागलपुरी और मीर मर्दान अली साहिब हैदराबादी तथा ऐसे ही और बहुत से योद्धा इस जमाअत के भाले हाथों में लिए हुए और तलवारें लटकाए हुए आथम की कोठी पर मौजूद थे और न एक बार अपितु तीन बार इन हथियारबंद सवारों का आथम पर आक्रमण हुआ। आथम बेचारा इन आक्रमणों से डरता और भागता रहा और भय के मारे आथम ऐसा हो गया कि किसी स्थान पर रुक न सका।

यदि मौलवी ऐसा करते तो निस्सन्देह उनकी गवाही के बाद आथम का काम कुछ बन जाता परन्तु अफ़सोस अब इन अभागे धर्म बेचने वालों का मुफ़्त में ईमान भी गया और आथम भी वही خَسِرَ الدیناوالاخرۃ रहा।

ग़ज़ब की बात है कि ये लोग इस प्रकार सच्चाई का ख़ून कर रहे हैं। ये ख़ूब जानते हैं कि आथम इस इक़रार के बाद कि वह भविष्यवाणी की श्रेष्ठता से नहीं डरा अपितु हमारी जमाअत के आक्रमणों से डरा। कानूनी और शरई तौर पर इस पकड़ के योग्य ठहर गया था कि अपने इस दावे को या तो नालिश के द्वारा सिद्ध करता या गवाहियों से और या अन्त में क़सम खाकर अपनी सफ़ाई

प्रकट करता। फिर जबकि उसने भय का इक़रार कई बार रो-रो कर किया परन्तु तीन आक्रमणों का सबूत कुछ भी न दे सका। तो क्या अब तक उनकी दृष्टि में आथम भारमुक्त और सदाचारी रहा? क्या उनके दिल स्वीकार करते हैं कि हमारी जमाअत हथियार बाँध कर तीन बार आथम को क़त्ल करने के लिए गई थी। क्या उनकी अन्तरात्मा इस बात को सही समझती है कि हम ने आथम पर एक शिक्षा प्राप्त सांप छोड़ा था। मैं जानता हूं कि उनका दिल कदापि विश्वास नहीं करता होगा। यद्यपि यह आशा नहीं कि मुंह की बक-बक मरते दम तक भी छोड़ें, परन्तु उनका दिल इन बातों को अवश्य झूठा षड्यंत्र समझेगा। क्योंकि इतना अपवित्र झूठ पापी से पापी मनुष्य स्वीकार नहीं कर सकता। तो अब जबकि भय का इक़रार मौजूद और आथम के प्रस्तुत किए हुए कारण झूठे ठहरे तो ऐसे समय में तो हमारे विरोधी मौलवियों की ईमानदारी को भी थोड़ा तराज़ू में रख कर तोल लो कि एक ईसाई के स्पष्ट झूठ को सच्चा करके व्यक्त करना और पादरियों की हाँ के साथ हाँ मिलाना और इस्लाम का दावा करके ईसाइयत का सहायक होना क्या यह सौभाग्यशाली लोगों का काम है या उन का जो अन्तिम युग के धर्म विक्रेता हैं।

हे दुष्ट मौलवियो! और उनके चेलो और ग़ज़नी के अपवित्र सिक्खो तुम्हारी हालत पर अफ़सोस यदि तुम इस से पूर्व मर जाते तो क्या (ही) अच्छा होता। मुसलमानों को तुमने काफ़िर बनाया, ईसाइयों को तुमने सच्चा ठहराया और पादरियों की हाँ के साथ हाँ मिलाई और अन्ततः प्रत्येक बात में झूठे और दुष्कर्मी निकले। क्या ऐसा करना बुद्धि, सभ्यता और ईमान का काम था।

हम अपने पहले विज्ञापन में नबवी **आसार** (नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वे कार्य जो प्रचलित हैं परन्तु हदीसों के तौर पर नहीं) के साथ सिद्ध कर चुके हैं कि यह फित्नः और छल जो ईसाइयों ने किया यह महदी मौऊद की निशानियों में से एक निशानी है। और अवश्य था कि ऐसा ही होता क्योंकि हदीस के शब्द साफ़ संकेत करते हैं कि महदी के समय में मुसलमानों का ईसाइयों के साथ कुछ मुनाज़रा (शास्त्रार्थ) घटित होगा और पहले थोड़ा होगा और फिर वह लम्बा होकर एक बड़ा फित्नः हो जाएगा। उस समय आकाश से यह आवाज़ आएगीन कि "हक़ आले महदी में है" और शैतान से यह आवाज़ कि "हक़ आले ईसा के साथ है" अर्थात ईसाई सच्चे हैं। यह हदीस स्पष्ट तौर पर बता रही है कि इस फित्नः के समय जितने लोग ईसाइयों का साथ देंगे वे शैतानों की सन्तान हैं और उनकी आवाज़ शैतान की आवाज़ है। और इस हदीस में इस ओर भी संकेत है कि उन्हीं दिनों में चन्द्र-ग्रहण और सूर्य-ग्रहण भी रमज़ान में होगा। अतः एक चन्द्र-ग्रहण और सूर्य-ग्रहण तो मुबाहसः के बाद हुआ और एक चन्द्र और सूर्य ग्रहण रमज़ान में। इस फित्नः के बाद अब अमरीका में हो गया। ये दोबारा चन्द्र-ग्रहण और सूर्य ग्रहण एक ठोस निशानी महदी के प्रकटन की थी जो कभी किसी दावेदार के साथ जब से संसार की नींव डाली गई जमा नहीं हुई और यह आकाशीय आवाज़ थी जो महदी मौऊद की सत्यापनकर्ता थी।

अब बटालवी और लुधियानवी हिन्दूज़ादा कुछ लज्जा एवं शर्म को काम में लाकर कहें कि उनकी ये आवाज़ें जो ईसाइयों की सहायता में हुईं जिन का झूठा होना हमने प्रकट कर दिया है ये सब शैतानी

आवाज़ें हैं या नहीं। हम सिद्ध कर चुके हैं कि इन आवाज़ों में उन्होंने सच्चाई को त्याग दिया और अक्षरश: अत्याचार और बेईमानी से काम लिया और ईसाइयों की हां में हाँ मिलाई तो निस्सन्देह वे इस हदीस का चरितार्थ ठहर गए। अत: इस घटना के सही होने की यह हदीस भी एक गवाह है जो ग्यारह सौ वर्ष से पुस्तकों में लिखी जा चुकी है।

ओर इसी घटना पर एक और गवाह है। अर्थात् हमारा वह इल्हाम जो बराहीन में दर्ज है जिस पर लगभग सोलह वर्ष गुज़र चुके हैं और उसकी इबारत यह है-

وَلَنْ تَرْضٰی عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَلَا النَّصَارٰی حَتّٰی تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ
قُلْ هُوَاللّٰهُ اَحَدٌ۔ اَللّٰهُ الصَّمَدُ۔ لَمْ يَلِدْ ۔وَ لَمْ يُوْلَدْ ۔وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ
كُفُوًا اَحَدٌ۔ وَ يَمْكُرُوْنَ وَ يَمْكُرُ اللّٰهُ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمَاكِرِيْنَ
اَلْفِتْنَةُ هٰهُنَا فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُولُوالْعَزْمِ۔ تَبَّتْ يَدَا اَبِيْ لَهَبٍ
وَّ تَبَّ مَا كَانَ لَهٗ اَنْ يَّدْخُلَ فِيْهَا اِلَّا خَائِفًا وَ مَا اَصَابَكَ فَمِنَ اللّٰهِ

अर्थात् यहूदी (इन से अभिप्राय यहां यहूदी विशेषता रखने वाले उलेमा हैं) और ईसाई जिन पर अन्तिम युग का प्रत्येक फित्ने का अन्त हुआ तुझ से कदापि राज़ी न होंगे जब तक तू उन के विचारों का अधीन न हो। उनको कह दे कि ख़ुदा एक है उसके अस्तित्व एवं विशेषताओं के साथ कोई भी भागीदार नहीं। न इस प्रकार से जो ईसाई कहते हैं और न उस तरह पर कि जो यहूदी विशेषता रखने वाले मुसलमान मसीह में अतिशयोक्ति करके कहते हैं न वह किसी का बेटा न कोई उसका बेटा न कोई उसका सहगोत्र। और ये यहूदी गुण वाले मुसलमान तथा ईसाई तुझ से भविष्य में एक छल करेंगे और ख़ुदा भी उन से एक छल करेगा और ख़ुदा का छल उत्तम अर्थात् चल जाने

वाला है। उस समय इन यहूदी गुण वाले मुसलमानों तथा ईसाइयों की ओर से सहमति के साथ एक फ़ित्नः होगा। अतः तू इस समय सब्र कर जैसा कि दृढ़ सकंल्प रसूल सब्र करते रहे। अबू लहब के हाथ तबाह हो गए और वह भी तबाह हो गया। उसे नहीं चाहिए था कि इस फ़ित्नः के मध्य आता परन्तु डरता-डरता। अबू लहब से अभिप्राय वह व्यक्ति है जिसने फ़ित्नः की अग्नि को मुसलमानों में भड़काया और मुसलमानों को काफ़िर ठहराया तथा ईसाइयों का समर्थन किया। तो चूंकि उसका काम अग्नि भड़काना और मुसलमानों को धोखे में डालना था इसलिए उसका नाम अबू लहब हुआ। क्योंकि लहब अग्नि की लौ को कहते हैं और अरबी भाषा में एक वस्तु के आविष्कारक को उसका बाप ठहराते हैं तो चूंकि फ़ित्नः की अग्नि की लौ उस व्यक्ति से पैदा हुई है जिसका भविष्यवाणी में वर्णन है। इसलिए वह इस अग्नि की लौ का बाप हुआ और अबू लहब कहलाया। और जहां तक मैं समझता हूं यहां अबू लहब से अभिप्राय शेख़ मुहम्मद हुसैन बटालवी है। وَاللّٰہُ اَعۡلَمُ क्योंकि उसने प्रयास किया कि फ़ित्नः को भड़काए और यह जो फ़रमाया कि यदि हस्तक्षेप करता तो डरते-डरते हस्तक्षेप करता। यह इस बात की ओर संकेत है कि यदि कोई बात समय के किसी मुजद्दिद की किसी को समझ न आए तो कुछ हानि नहीं कि डरते-डरते नेक नीयत तथा पवित्र हृदय के साथ उस मामले में बहस करे परन्तु शत्रुता और गालियों तक इस मामले को न पहुंचाए कि उसका अंजाम ईमान का छीना जाना और अबू लहब की उपाधि है। और फिर फ़रमाया कि इस फ़ित्नः में तुझे जो कष्ट पहुंचेगा वह ख़ुदा तआला की ओर से है और उसकी हिकमत और हित पर

आधारित है, क्योंकि हमेशा श्रेणियों में उन्नति इब्तिला (परीक्षा) से ही होती है। अवश्य है कि मोमिन आज़माया जाए और उसे दु:ख दें तथा भिन्न-भिन्न प्रकार की बातें उस के बारे में कहें और उस से हंसी-ठट्ठा हो जब तक कि तक़्दीर (प्रारब्ध) अपने लिखे हुए मामले के समय तक पहुँच जाए।

अब न्यायवान लोग उस भविष्यवाणी पर भी न्यायपूर्वक दृष्टि डालें जो लगभग सोलह वर्ष से **बराहीन अहमदिया** में छप कर सम्पूर्ण पंजाब, हिंदुस्तान और अरब तक प्रकाशित हो चुकी है। क्या यह साफ और स्पष्ट शब्दों में उस घटना की सूचना नहीं देती जिसमें ईसाइयों के साथ यहूदी सिफ़त उलेमा ने अपने छल का पैबन्द (जोड़) किया। क्या यह भविष्यवाणी उस महान घटना की सूचना नहीं देती जिस की ओर हदीस ने संकेत किया था।

अत: एक बुद्धिमान के लिए नबवी आसार और यह इल्हाम अटल विश्वास तक पहुंचाने वाला है और जो शर्त आथम के मुकाबले पर इल्हाम में दर्ज की गई वह ख़ुदा तआला की ओर से इस उद्देश्य से की थी कि वह दिलों को परखे और आज़माए और मानवीय अक़्लों का घमण्ड तोड़े और ताकि वह भविष्यवाणी पूरी हो जाए जो तेरह सौ वर्ष पूर्व उस युग से हमारे सय्यद-व-मौला नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने की थी और ताकि वह इल्हाम भी पूरा हो जो इस समय से सोलह वर्ष पूर्व **बराहीन अहमदिया** में दर्ज और प्रकाशित हो चुका था।

इसलिए बुद्धिमानों के लिए यह ख़ुशी का अवसर था कि आथम के मुकाबले पर जो भविष्यवाणी की गई थी उसके आयोजन से

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी भी पूरी हुई।

न्यायवानो! अब फिर दृष्टि उठाओ और सोच लो कि जब भविष्यवाणी में सच्चाई की ओर रुजू करने की स्पष्ट शर्त मौजूद थी और आथम से वह बदहवासी वह आतुरता, वह परेशानी तथा भयभीत हालत प्रकटन में आई थी कि वह उस पकड़ के अधीन आ गया था कि क्यों उसनें इतना कष्ट और बेचैनी व्यक्त की और उसके इतने हताश होने की ख्याति जगह-जगह फैल गई थी कि अन्ततः मीआद गुज़रने के बाद स्वयं उसे चिन्ता पड़ गई कि मैं इस भय और रोने-धोने तथा गिड़गिड़ाने को किसी प्रकार छुपा नहीं सकता जो मुझ से मीआद के अन्दर प्रकट होता रहा। इसलिए न प्रसन्नता न आज़ादी से अपितु विवश होकर उसे भय का इक़रार करना पड़ा और इस सीमा तक तो उसने सच बोला कि मुझे तीन दृश्य दिखाई दिए परन्तु आगे चलकर क़ौम को ध्यान में रख कर झूठ बोल गया कि वे इन्सानी आक्रमण थे, किन्तु वह इस झूठे षड्यंत्र को सिद्ध न कर सका।

इसलिए यदि हमारे मौलवियों और अखबार लिखने वालों में कुछ भी ईमानदारी और धार्मिक सहायता का जोश होता तो वे ऐसे प्रमाण रहित आरोप पर उसको पकड़ लेते और समझ जाते कि इस मक्कार संसार परस्त ने यह झूठ केवल इसलिए बाँधा है ताकि उस भय को जिसे वह छुपा नहीं सकता था इन तावीलों से छुपाए। परन्तु यह अंधे मौलवी और जाहिल अख़बार लिखने वाले तो पागल दरिन्दों की तरह अपने ही घर को ध्वस्त करने के लिए उठ खड़े हुए। यदि थोड़ा होश संभाल कर इल्हाम की शर्त को देखते और एक प्रतिभावान हृदय लेकर आथम की उन हालतों पर दृष्टि डालते जो उसने मीआद

के अन्दर प्रकट कीं तो उन पर स्पष्ट हो जाता कि भविष्यवाणी अवश्य पूरी हो गई। परन्तु दुर्भाग्यशाली मनुष्य हमेशा जल्दबाज़ी से अपनी आख़िरत ख़राब करते रहे हैं। अफ़सोस इन लोगों ने नहीं सोचा कि क्या ईसाई ऐसी क़ौम ईमानदार क़ौम है जिसकी प्रत्येक बात अकारण स्वीकार कर लेनी चाहिए।

जब आथम के कथनानुसार अमृतसर में उस पर आक्रमण हुआ अर्थात् एक शिक्षा प्राप्त सांप ने उसे डस कर मारना चाहा। इस पर आथम का यह उत्तर है कि चूंकि ईसाई अत्यन्त नेक स्वभाव और ईमानदार हैं। इसलिए इस आक्रमण के बारे में सरकार में शिकायत नहीं की गई और न अदालत में कोई नालिश हुई अपितु जान-बूझ कर अपराधियों को छोड़ दिया। क्योंकि ईसाई सहनशीलता ऐसा ही प्रेम और क्षमा करने को चाहती थी।

फिर उस के कथनानुसार दूसरी बार हमारी जमाअत के कुछ लोगों ने लुधियाना में भालों के साथ उस पर आक्रमण किया परन्तु उसके कथनानुसार अब भी उस के हृदय की पवित्रता जो पोलूस रसूल से बतौर विरासत चली आती है प्रतिशोध लेने तथा अपराधियों को पकड़ने में अवरोधक हुई। इसलिए इस बार भी उसने अपने ख़ूनी शत्रुओं को जान-बूझ कर छोड़ दिया और कहा चलो इन से तो हुआ परन्तु हम से न हो। किन्तु नीच शत्रुओं ने फिर भी पीछा न छोड़ा और उस बूढ़े सौभाग्यशाली उपकारी की इतनी बड़ी नेकी का थोड़ा सा भी सम्मान न किया अपितु जब यह फ़ीरोज़पुर छावनी में गया तो वहाँ भी छाया की तरह पीछे-पीछे पहुँच गए और प्राण लेने के लिए तलवारों के साथ कोठी की प्राचीर में जा घसे। परन्तु चूंकि वह बूढ़ा

बहुत ही पवित्र हृदय, कम कष्ट और पोलूस रसूल की पूरी तस्वीर अपने अन्दर रखता था। इसलिए उसने इस बार भी न पकड़ा और न पुलिस के लोगों को पकड़ने दिया और कहा कि मैं मुसलमानों की तरह नहीं मैं बुराई के बदले बुराई कदापि नहीं करूंगा और वे गुण्डे भी कैसे सौभाग्यशाली कि इस आपराधिक स्थिति में किसी बाज़ारी आदमी और मार्ग से गुज़रने वाले व्यक्ति ने भी उन को आते-जाते हथियारों के साथ न देखा और आथम साहिब वह उच्च हौसला कि यह तो अलग कि सरकार में उन ख़ूनी शत्रुओं की सूचना देते या फ़ौजदारी अदालत में कानून के अनुसार नालिश करके इस ख़ाकसार का मुचलका लिखवाते, उन्होंने भविष्यवाणी की मीआद में अखबारों में भी यह बात नहीं छपवाई कि शायद यह भी पाप में दाखिल न हो।

हे मौलवी लोगो! और अखबार लिखने वालो! क्या आप का यह विचार है कि ईसाई हुए मुर्तदों का यह फ़िर्क़ा ऐसा ही सौभाग्यशाली है और ऐसा ही ईमानदार है कि कभी मुंह से झूठ नहीं निकलता और नहीं जानते कि छल और षड्यंत्र रचना क्या चीज़ है। और छल-कपट और धोखा किसे कहते हैं परन्तु मैं जानता हूं कि समस्त सत्यनिष्ठा ईमान का विभाग हैं। जिन लोगों ने पैसे-पैसे के लिए या स्त्रियों की अभिलाषा से धर्म बेच डाला और इस्लाम से बाहर निकल कर ईमानदारी के झरने का अपमान किया है उनको नेक समझना अत्यन्त अपवित्र प्रकृति वाले मनुष्य का काम है।

हे मेरे प्रिय मित्रो! आप लोग इस क़ौम को और इस क़ौम के षड्यंत्रों को खूब जानते हो कि इन लोगों को झूठ बांधने में कहां तक कमाल प्राप्त है। पोर्ट साहिब अपनी पुस्तक मुअय्यदुल इस्लाम में

पादरियों की मक्कारियां नमूने के तौर पर लिखते हैं कि एक बुज़ुर्ग पादरी ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जीवनी में एक पुस्तक लिखी और उसमें एक अवसर पर वर्णन किया कि जैसे नऊज़ुबिल्लाह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक कबूतर सिधाया हुआ था कि वह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कानों पर आकर अपना मुंह रख देता था और यह हरकत इसलिए सिखाई गई ताकि लोग समझें कि यह रूहुल-क़ुदुस है जो कि वह्यी पहुंचाता और ख़ुदा तआला का सन्देश लाता है। परन्तु जब उस पादरी को लोगों ने कठोरता से पकड़ा कि यह क़िस्सा तू ने कहां से नक़ल किया है तो उसने स्पष्ट इक़रार किया कि मैंने जान-बूझ कर झूठ बनाया है। मालूम होता है कि इस दुष्ट पादरी को उस कबूतर के बारे में सन्देह होगा जो इंजील में वर्णन किया गया है जो सम्पूर्ण आयु में केवल एक बार हज़रत मसीह पर उतरा था और फिर कभी मुंह न दिखाया। कहते हैं कि वास्तव में वह कबूतर नहीं था अपितु रूहुल-क़ुदुस था। खैर इस झगड़े से तो हमारा कुछ संबंध नहीं केवल यह दिखाना अभीष्ट है कि इस दुष्प्रकृति पादरी ने यह झूठ उसी इंजीली क़िस्से की कल्पना से बना लिया था। यदि ऐसा विचार हज़रत ईसा के बारे में उसको पैदा होता तो कुछ अनुचित न था। क्योंकि हज़रत ईसा के बारे में ऐसा व्यर्थ क़िस्सा इंजीलों में मौजूद है जिसका अब तक कोई सबूत किसी ईसाई ने नहीं दिया और न वह कबूतर सुरक्षित रखा और पादरियों के षड्यंत्र केवल इसी पर बस नहीं अपितु ये वही लोग हैं जिन्होंने कई जाली इंजीलें बना डालीं और ख़ुदा तआला पर झूठ गढ़ने से न डरे। अभी वर्तमान में एक नई इंजील किसी बुज़ुर्ग ईसाई

ने तिब्बत देश से प्राप्त की है जिस की बड़े जोश से ख़रीदारी हो रही है और उनमें से एक बड़े मुक़द्दस का यह कहना है कि धर्म की उन्नति और सहायता के लिए झूठ बोलना न केवल वैध अपितु मुक्ति का माध्यम है। इस क़ौम का झूठ से प्रेम करना अप्रैल-फ़ूल की रस्म से भी सिद्ध होता है। इन लोगों का विचार है कि यदि अप्रैल में लेखों और अख़बारों में वास्तविकता के विरुद्ध बातें तथा अनुमान के विरुद्ध मामले प्रकाशित किए जाएं तो कुछ हानि नहीं। इस से विश्वास होता है कि संभवतः इंजील का बहुत सा भाग अप्रैल में ही लिखा गया है और निस्सन्देह तस्लीस की समस्या की जड़ भी यही महीना है जिसमें बेधड़क झूठ बोला जाता है और अनुमान के विरुद्ध बातें प्रकाशित की जाती हैं। इसलिए इन लोगों के नज़दीक किसी आवश्यकता के समय झूठ का प्रयोग करना कुछ घृणा की बात नहीं। जब देखते हैं कि कोई दोष उजागर होने लगा है तो तुरन्त झूठ से काम लेते हैं।

अब्दुल मसीह और अब्दुल्लाह हाशिमी का कैसा झूठा क़िस्सा बना लिया। क्या हारुन और मामून के समय में प्रोटेस्टेंट का नामोनिशान भी था जिसके समर्थन में दो काल्पनिक व्यक्तियों का अरबी भाषा में मुबाहसः लिखा गया। अतः जो लोग मशीनों के आविष्कार की तरह प्रतिदिन नए-नए झूठ भी आविष्कृत करते रहते हैं वे किसी पेच में फंस कर क्यों झूठ नहीं बोलेंगे। यह प्रमाणित बात है कि अकारण झूठ बोल देना इन्हीं लोगों की विशेषता है। देखो 25 जनवरी 1895 ई. के पर्चे नूर अफ़्शां में बेचारे अकबर मसीह को धार्मिक वैर के कारण जीवित दफ़्न कर दिया गया। कथित पर्चे में छप गया कि अकबर मसीह तस्लीस का शत्रु रेल के अघात से मृत्यु पा गया ओर मरते समय

वह एक पादरी साहिब के मार्ग-दर्शन से तौब: करने वाला हुआ और हज़रत मसीह की ख़ुदाई का क़ाइल होकर मरा और अपनी विरोधपूर्ण पुस्तकें जला दीं और तौब: करके बहुत रोया और क़ाइल हुआ कि अब मैं समझा कि वास्तव में हज़रत मसीह ख़ुदा ही हैं!!! हालांकि न उसको कोई रेल का आघात पहुँचा न वह मरा, न तौब: की न पुस्तकें जलाईं और न हज़रत मसीह की ख़ुदाई का क़ाइल हुआ अपितु जीवित मौजूद और अब तक तस्लीस का शत्रु है। अकारण एक नीच ईसाई ने उस बेचारे के परिवार तथा दोस्तों को संकट में डाला। अफसोस कि हमारे कृपणप्रकृति मौलवियों को यह विचार न आया कि यह आथम भी इसी झूठ गढ़ने वाली क़ौम में से है और यह वही अपवित्र प्रकृति रखने वाला है जिसने इस से पहले हमारे सय्यद-व-मौला मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नऊज़ुबिल्लाह अपनी पुस्तक में दज्जाल का नाम दिया। **ऐसा कहने वाले पर अल्लाह की लानत हो क़यामत के दिन तक।** फिर इसके सबूतविहीन बकवास पर विश्वास करने वाला भी दज्जाल से कम नहीं। क्या बुद्धि और इन्साफ़ की दृष्टि से उस पर आरोप स्थापित नहीं हुआ कि वह भविष्यवाणी की मीआद में अपने डरने का इक़रार करके फिर इन बेहूदा षड्यंत्रों का सबूत नहीं दे सका कि वह भविष्यवाणी की श्रेष्ठता से नहीं अपितु सांप इत्यादि के आक्रमणों से कारण डरता रहा। वह इन बातों को नालिश द्वारा सिद्ध न कर सका जो डर की बुनियाद उसने स्थापित की थी,अर्थात तीन आक्रमण। और उसने यह भी न चाहा कि क़सम खा कर अपनी सफ़ाई करे और जब इस बात पर बल दिया गया कि ऐसे बहानों के प्रस्तुत होने पर क्यों न यह समझा जाए कि ये तीन

आक्रमणों की योजना केवल इस उद्देश्य से गढ़ी गई है ताकि उस भय और अधीरता को कुछ छुपाया जाए जिस से आथम स्वप्न से भी चीखें मार कर उठता रहा और अमृतसर में भी बीमारी की तीव्रता में उसने एक चीख मारी और कहा कि **हाय मैं पकड़ा गया।** तो इन बातों का कोई उत्तर उसने सफ़ाई से नहीं दिया। अन्त में इसी कारण से क़सम की आवश्यकता पड़ी। परन्तु उसने एक झूठे बहाने से क़सम को भी टाल दिया। हमारे मौलवियों और अखबार के सम्पादकों में यदि सच्चाई के समर्थन का कुछ तत्त्व होता तो वे उसी समय धर्म के समर्थन में परिणाम निकाल लेते। जबकि आथम ने अपने भयभीत रहने का कारण वर्णन कर दिया था कि मुझ पर तीन आक्रमण हुए और यदि इस पर संतुष्टि न होती तो आथम को क़सम पर विवश करते। क्योंकि जब आथम अपने कथन और कर्म से अत्यधिक भय का क़ायल हो चुका था तो यह मांग क़ानून और शरीअत के अनुसार उस से उचित थी कि क्यों यह विश्वास न किया जाए कि वह सब भय भविष्यवाणी के कारण था विशेष तौर पर वे भय के कारण जो वर्णन किए गए बिल्कुल झूठे और बेकार, बरबूदार और बनावटी सिद्ध हुए, और यह उसकी अत्यन्त रियायत की गई थी कि इसके बावजूद कि उसके झूठ पर ज़बरदस्त क़रीने स्थापित हो चुके थे और अनुचित बहानों से अपराध पूर्ण सबूत को पहुँच गया था फिर भी हमने उससे क़सम की मांग करके वादा किया कि हम उसको क़सम के दुष्परिणाम न पैदा होने पर ईमानदार समझ लेंगे और न केवल यही अपितु चार हज़ार रुपया नक़द देंगे परन्तु वह फिर भी भाग गया और क़सम न खाई। मुसलमानों को चाहिए था कि उसके ऐसे खुले-खुले

इन्कार पर विजय का नगाड़ा बजाते न कि ईसाइयों के साथ हाँ में हाँ मिलाते। परन्तु जब तक इन्सान कंजूसी से रिक्त न हो तब तक वास्तव में अँधा होता है।

ओर ईसाइयों की हालत पर अत्यन्त आश्चर्य है कि इस भविष्यवाणी पर जो ऐसी सफाई से अपनी शर्त के पहलू पर पूरी हो गई उन्होंने केवल दुष्टता से वह कोलाहल किया और वह अपमान किया और गन्दी गालियां दीं तथा कूचों और बाज़ारों में शैतानी बहरूप दिखाए कि अपनी सम्पूर्ण प्रकृति के पर्दे खोल दिए। हालांकि भविष्यवाणी में एक साफ़ शर्त मौजूद थी और शक्तिशाली क़रीनों के अनुसार वह शर्त पूरी हो चुकी थी और प्रत्येक बात में आरोप योग्य आथम था और उसकी बातचीत से उसका मक्कार और झूठा होना सिद्ध हो गया था। अफ़सोस कि उन्होंने इस रोशन भविष्यवाणी से तो इन्कार किया, परन्तु उनको हज़रत मसीह की वे भविष्यवाणियां याद न रहीं जो अपने प्रत्यक्ष अर्थों में पूर्ण न हुईं अपितु उनके विपरीत घटित होना इस प्रकार से खुला कि वहाँ कोई तवील भी प्रस्तुत नहीं की जा सकती। देखो हज़रत मसीह का किस ज़ोर से दावा था कि इस युग के कुछ लोग अभी जीवित होंगे कि मैं फिर आ जाऊँगा। परन्तु वे सब मर गए और इस पर अठारह सौ वर्ष और भी गुज़र गए और वह जैसा कि ईसाइयों का विचार है अब तक न आ सके!!! फिर इस से विचित्रतं यह कि पहली किताबों में हज़रत मसीह के बारे में यह भविष्यवाणी लिखी थी कि "अवश्य है कि उससे पहले एलिया आए अर्थात् वह नबी एलिया नाम जो इस संसार से पर्याप्त समय पूर्व गुज़र चुका था परन्तु एलिया न आया और यहूदियों ने हज़रत मसीह पर

आरोप लगाया कि एलिया तो अभी आकाश से उतरा ही नहीं आप क्योंकर नबी हो सकते हैं। हज़रत मसीह इस का कुछ भी उत्तर नहीं दे सके। सिवाए इस के कि यह्या ज़करिया का बेटा ही एलिया है। परन्तु स्पष्ट है कि यह उत्तर तो एक तावील है जो भविष्यवाणी के बाह्य शब्दों के सर्वथा विपरीत है। यदि ऐसी ही तावील से कोई भविष्यवाणी पूरी हो सकती थी तो प्रत्येक व्यक्ति ऐसी तावील कर सकता था। और आश्चर्य तो यह कि हज़रत यह्या को एलिया होने से इन्कार है। अब इस इन्कार से वह तावील भी व्यर्थ हो गई और जबकि हज़रत मसीह के सच्चा नबी होने का सम्पूर्ण आधार इसी भविष्यवाणी के पूर्ण होने पर था और यह पूर्ण न हुई तो पादरी साहिबान तो हज़रत मसीह की ख़ुदाई को रोते हैं और यहां नुबुव्वत भी हाथ से गई अपितु झूठा और मुफ़्तरी होना सिद्ध होता है। क्योंकि एलिया के आने से पहले जो व्यक्ति मसीह होने का दावा करे वह उसका दावा सही नहीं है। इसलिए यहूदी अब तक यही प्रस्तुत करते हैं और ख़ुदा की किताब के प्रत्यक्ष स्पष्ट आदेश यहूदियों के साथ हैं। उनका तर्क यह है कि यदि एलिया से कोई अन्य व्यक्ति अभिप्राय होता तो ख़ुदा तआला अपने बन्दों को धोखा न देता अपितु स्पष्ट शब्दों में कह देता कि एलिया तो आकाश से दोबारा नहीं उतरेगा। अपितु उसके स्थान पर यहया ज़करिया का बेटा पैदा होगा उसी को एलिया समझ लेना। यह भविष्यवाणी ईसाई धर्म को नितान्त बेचैनी में डालती है। यदि क़ुर्आन हज़रत मसीह की नुबुव्वत का सत्यापनकर्ता होकर हज़रत इब्ने मरयम को नबियों में सम्मिलित न करता तो क्या कोई बुद्धिमान स्वीकार कर सकता था कि ईसा भी वास्तव में नबी है, क्योंकि ख़ुदा की किताब

का खुला-खुला स्पष्ट आदेश यहूदियों के हाथ में है जिससे हज़रत मसीह किसी प्रकार सच्चे नबी नहीं ठहर सकते।

कुछ मुसलमान मूर्खता से कहते हैं कि शायद वह भविष्यवाणी अक्षरांतरित हो गयी होगी परन्तु ऐसा विचार करने वाले बहुत मूर्ख हैं। अक्षरांतरण तो निश्चित तौर पर बाइबल के कुछ स्थानों में हुआ है परन्तु जिस स्थान को स्वयं हज़रत मसीह ने अक्षरांतरण रहित ठहरा दिया है वह स्थान निस्सन्देह हज़रत मसीह और यहूदियों की सहमति से अक्षरांतरण के आरोप से पवित्र है। और पवित्र क़ुर्आन तथा हदीस में इस क़िस्से का कुछ वर्णन ही नहीं ताकि हम कह सकें कि यह क़िस्सा हदीस और पवित्र क़ुर्आन के विपरीत है। तो हम बहरहाल इस किस्से को झुठलाने का अधिकार नहीं रखते हैं। हमें इतना कहना आवश्यक है कि यद्यपि ख़ुदा की किताब के स्पष्ट आदेश के प्रत्यक्ष शब्द यहूदियों के बहाने के समर्थक हैं और यदि प्रत्यक्ष (ज़ाहिर) पर फैसला करें तो निस्सन्देह हज़रत मसीह की नुबुव्वत सिद्ध नहीं हो सकती अपितु झूठ और स्वयं गढ़ा हुआ झूठ सिद्ध होता है। और झूठ भी ऐसा झूठ कि जिसको एलिया नबी बनाया गया वह स्वयं **एलिया** होना स्वीकार नहीं करता और मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त का मामला दिखाई देता है। परन्तु चूंकि पवित्र क़ुर्आन ने हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की नुबुव्वत की पुष्टि कर दी है। इसलिए हम बहरहाल **हज़रत मसीह को सच्चा नबी** कहते और मानते हैं और उनकी नुबुव्वत से इन्कार करना स्पष्ट कुफ़्र ठहराते हैं।

और **एलिया** के क़िस्से में यहूदियों का यह तर्क कि यदि यही व्यक्ति वास्तव में मसीह मौऊद था तो एलिया के दोबारा आने की

भविष्यवाणी में ख़ुदा तआला ने अपने बन्दों को क्यों धोखा दिया। इस प्रकार भविष्यवाणी के शब्द क्यों न लिखे कि अवश्य है कि मसीह से पूर्व यह्या बिन ज़करिया आए और जबकि ख़ुदा की किताब के स्पष्ट आदेश के ज़ाहिर शब्दों पर ईमान लाना आवश्यक है तो ऐसे अवसर पर तावीलें करना कुफ्र है। यह वह तर्क है जो अब तक यहूदी लोग मसीह की नुबुव्वत के इन्कार में प्रस्तुत करते हैं।

किन्तु अब हम क़ुर्आन के मआरिफ़ से शक्ति पाकर कह सकते हैं कि जबकि मसीह की नुबुव्वत क़ुर्आन के उतरने से पूर्ण सच्चाई को पहुँच गई है तो यद्यपि भविष्यवाणी के ज़ाहिर शब्द उनके कैसे ही विपरीत हों तब भी हमें उसकी तावील कर लेना चाहिए। क्योंकि भविष्यवाणियों में प्रायः रूपक भी होते हैं जिन से ख़ुदा की प्रजा की परीक्षा अभीष्ट होती है तो क्यों एलिया की भविष्यवाणी को भी रूपकों के वर्ग से न समझा जाए। यहूदी लोग ख़ुदा तआला के इन नियमों से भली भांति जानकारी नहीं रखते थे कि कभी ख़ुदाई भविष्यवाणियों में इस प्रकार के रूपक भी होते हैं कि नाम किसी का लिया जाता है और प्रसंगों की दृष्टि से अभिप्राय कोई और होता है परन्तु पवित्र क़ुर्आन ने इस उम्मत पर उपकार किया कि ये समस्त मआरिफ़ और अल्लाह के नियम समझा दिए बल्कि इन तरीकों को कई स्थानों में स्वयं ग्रहण करके भली भांति बोध कर दिया। देखो अपने युग के यहूदियों को कैसे दोषी किया कि तुम ने मूसा की अवज्ञा की, हारुन का मुकाबला किया। हालांकि इस अपराध के अपराधी वे तो नहीं थे अपितु उन के बाप-दादे थे। और भली भांति बार-बार समझा दिया कि कोई व्यक्ति दोबारा संसार में नहीं आया

करता परन्तु यह समझ यहूदियों को नहीं दी गई थी तथा तौरात की शैली एवं पद्धति ने उनको क़यामत के बारे में भी सन्देह और शंका में रखा था और पवित्र क़ुर्आन की तरह तौरात के स्पष्ट आदेश से उन पर स्पष्ट नहीं हुआ था कि कोई व्यक्ति इस संसार से गुज़र कर पुनः इस संसार में आबाद होने के लिए नहीं आ सकता। इसलिए वह इस भवंर में पड़े। और उनका इस बात पर बल देना सर्वथा मूर्खता थी कि वास्तव में हज़रत एलिया अलैहिस्सलाम दोबारा आकाश पर से मसीह मौऊद से पहले आ जाएंगे और उनके पास इस प्रकार से दोबारा आने का कोई उदाहरण भी नहीं था। हाँ आजकल ज़ाहिरी अधमुल्लाओं के समान केवल शब्दों पर ज़ोर था और एक मूर्ख की दृष्टि में बाह्य रंग में यहूदियों का तर्क एलिया के दोबारा आने की भविष्यवाणी में शक्तिशाली मालूम होता था और हज़रत ईसा की तावील कुछ तुच्छ और बोदी सी पाई जाती थी क्योंकि देखने में स्पष्ट आदेश यहूदियों का समर्थक था। परन्तु उस ख़ुदा की सुन्नत (नियम) पर दृष्टि डालने के पश्चात पवित्र क़ुर्आन से विस्तारपूर्वक ज्ञात होता है कि यह समस्या बिल्कुल साफ़ हो जाती है। क्योंकि संसार में किसी के दोबारा आने और संसार में दोबारा आबाद होने के बारे में यह पवित्र किताब स्पष्ट फैसला करती है कि ऐसा होना ख़ुदा के नियम के विरुद्ध है।

तो जब संसार में दोबारा आना निषेध हुआ तो फिर हज़रत एलिया अलैहिस्सलाम का आकाश से उतरना और यहूदियों के दिलों का मसीह मौऊद से पहले आकर ठीक करना स्पष्ट तौर पर झूठा हुआ। हाँ यह मामला पवित्र क़ुर्आन पर ईमान लाए बिना समझ में

नहीं आता। और यदि तौरात पर ही निर्भर रखा जाए तो अफ़सोस के साथ कहना पड़ता है कि मसीह सच्चा नबी कदापि नहीं था!!! एक संकट तो मसीह के बारे में यही था। दूसरे अत्याचारी ईसाइयों ने अपने हाथों से मसीह को तौरात इस्तिस्ना अध्याय-13 का चरितार्थ ठहरा कर सच्चे नबियों की पद्धति और प्रतिष्ठा से पूर्ण रूप से अभागा और वंचित कर दिया।

स्मरण रहे कि गहरी नज़र के बाद हज़रत मसीह की तावील यहूदियों के बाह्य दस्तावेज़ पर विजयी है, यद्यपि एक जल्दबाज़ और धोखा खाने वाला हज़रत मसीह की तावील पर हंसी-ठट्ठा करेगा कि अपनी नुबुव्वत के सिद्ध करने के लिए तुच्छ तावीलों से काम लिया है। किन्तु जो व्यक्ति क़ुर्आन का ज्ञान रखता है और ख़ुदा के नियमों के सिलसिले पर उसकी दृष्टि है भली भांति जानता है कि ख़ुदा तआला का निश्चित रूप से यही वादा है कि इस संसार से गुज़रने वाले पुनः आकाश से नहीं उतरा करते। वह न केवल हज़रत मसीह की तावील को स्वीकार करेगा अपितु इस तावील से आनन्द भी उठाएगा। क्योंकि वह तावील पुराने अहदनामः के अनुकूल है। यद्यपि अब तक नीचे यहूदी यही रोते हैं कि मसीह ने अपनी झूठी नुबुव्वत को लोगों में जमाने के इए पवित्र किताबों के स्पष्ट आदेश को छोड़ दिया है और उन से कभी वार्तालाप करने का संयोग हो तो यही धोखा देने वाला बहाना प्रस्तुत करते हैं और एक न जानने वाला व्यक्ति जब इन के इस बहाने को सुने तो अवश्य हज़रत मसीह की नुबुव्वत के बारे में कुछ दुविधा में पड़ जाएगा और संभव है कि उनके धोखेबाज़ और झूठा कह कर

स्वयं को तबाह करे। संभवतः यह आरोप वर्तमान के नास्तिकों ने यहूदियों से ही लिया है कि जिस हालत में यह वर्णन किया जाता है कि हज़रत मसीह मुर्दे जीवित किया करते थे अपितु एक बार तो समस्त मुर्दे और समस्त मुक़द्दस नबी जीवित होकर शहर में आ भी गए थे तो वह एलिया अलैहिस्सलाम ने जिन के दोबारा आने के कारण हज़रत मसीह ने विवश हो कर तुच्छ तावीलों से काम लिया, उनको क्यों अपनी नुबुव्वत के सत्यापन के लिए यहूदियों को दिखा कर इस झगड़े को तय न कर लिया और क्यों तुच्छ तावीलों के संकट में पड़े। जो व्यक्ति अपनी शक्ति से मुर्दे को स्वयं जीवित कर सकता था चाहिए था कि भविष्यवाणी की निशानी पूर्ण करने के लिए जीवित करता या आकाश से ही उतारा होता। ख़ुदाई के कार्य तो कुन-फ़यकून (हो तो हो जाता है) से चलते हैं। परन्तु इस ख़ुदा को क्या हुआ कि दुष्ट यहूदी उस पर विजयी हो गए और उनके तर्कों को खण्डित न कर सका और प्रत्यक्ष स्पष्ट आदेश को त्याग कर क्यों एक तावील से संसार को विनाश और फ़ित्नः में डाल दिया ताकि किसी प्रकार मसीह मौऊद बन जाए। जिस व्यक्ति के हाथ में जीवित करना हो अपितु उसका चमत्कार ही मुर्दों को जीवित करना हो उस पर क्या कठिनाई कि तुरन्त एलिया नबी को जीवित करके या आकाश से उतार कर यहूदियों पर स्पष्ट आदेश के बाह्य शब्दों के अनुसार अपने समझाने के प्रयास को पूर्ण कर देता। परन्तु ऐसे आरोप वही करेगा जो अपनी मूर्खता से संसार में दोबारा मुर्दों के आगमन को स्वीकार करेगा।

हमारे इस समय के नाम के मौलवी जो अटकलपच्चू कहते हैं

कि शायद एलिया नबी के दोबारा आने का क़िस्सा अक्षरांतरित हो यह उनकी सर्वथा बेईमानी है जिस क़िस्से की हज़रत ईसा ने पुष्टि की और उस पर समस्त यहूदियों की सहमति है वह अक्षरांतरित कैसे हो सकता है और फिर कुछ कमी के साथ हम कहते हैं कि अल्लाह और रसूल ने उसके अक्षरांतरित होने की हमें सूचना नहीं दी। इसलिए हम सही हदीस के अनुसार झुठलाने का अधिकार नहीं रखते। यदि لَا تُصَدِّقُوْا पर नज़र है तो لَا تُكَذِّبُوْا भी साथ में स्मरण रखो। परन्तु इस क़िस्से में तो हमारे मौलवियों को यह धड़का आरम्भ हुआ कि यदि ईसा की इस तावील को स्वीकार कर लें और क़िस्से को सही समझें तो फिर हज़रत ईसा के दोबारा आने से भी हाथ धो लेना चाहिए। जब एक बार फैसला हो चुका तो वही मुकद्दमा फिर उठाना यहूदी बन जाना है। मोमिन वह होता है जो दूसरे के हाल से शिक्षा ग्रहण करे। यदि नुज़ूल का शब्द हदीसों में मौजूद है तो ईसा की मौत के शब्द क़ुर्आन और हदीस दोनों में मौजूद हैं और توفّی के मायने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा से मार देने के अतिरिक्त और सिद्ध नहीं हुए। तो जब असल मामले की वास्तविकता यह खुली तो नुज़ूल उस की शाखा है। उसके वही मायने करने चाहिए जो असल के अनुसार हों। यदि समस्त संसार के मौलवी सहमत होकर आयत

يٰا عِيْسٰى إِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ (आले इमरान-56)

और आयत

فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِىْ (अलमाइदह-118)

में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम या किसी सहाबी

से मौत के अतिरिक्त कोई अन्य मायने सिद्ध करने चाहें तो उनके लिए कदापि संभव नहीं, यद्यपि इस ग़म में मर जाएं। इसी कारण से इमाम इब्ने हज़म और इमाम मालिक, इमाम बुख़ारी तथा अन्य बड़े-बड़े बुज़ुर्गों का यही मत है कि वास्तव में हज़रत ईसा मृत्यु पा चुके हैं। अफ़सोस कि मूर्ख मौलवियों ने अकारण शोर मचाया और अन्ततः ईसा की मृत्यु सिद्ध हुई, जिसके सबूत से वे ऐसे लज्जित हुए कि बस मर गए। ख़ुदा की वह्यी पर कम ध्यान देने से उन पर ये समस्त संकट आए, मौलवियों ने यह भी न सोचा कि ख़ुदा तआला ने आज से सोलह वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया में लिखित इल्हाम में इस ख़ाकसार का नाम ईसा रखा है। क्या इन्सान इतनी लम्बी योजना बना सकता है कि जो इफ़्तिरा (झूठ) सोलह वर्ष के बाद करना था उसकी भूमिका इतने समय पहले ही जमा दी और ख़ुदा ने भी इतनी लम्बी छूट दे दी जिस की संसार में जब से यह संसार आरम्भ हुआ कोई उदाहरण नहीं पाया जाता।

والسلام علیٰ من اتبع الھُدیٰ

وحی حق پُر از اشارات خداست
گر نفہمد جاہلے کج دل رواست

अनुवाद- ख़ुदा की वह्यी संकेतों से भरी हुई होती है। यदि कोई मूर्ख और मंदबुद्धि न समझे तो बिल्कुल संभव है।

چشمۂ فیض است وحی ایزدی
لیکن آن فہمد کہ باشد مہتدی

अनुवाद- ख़ुदा की वह्यी वरदान का एक झरना है परन्तु उसे वही समझ सकता है जो स्वयं हिदायत प्राप्त है।

وحی قرآن رازہا دارد بسے
نسبتے باید کہ تا فہمد کسے

अनुवाद- क़ुर्आनी वह्यी में बहुत रहस्य हैं अनुकूलता होनी चाहिए ताकि उसे कोई समझ सके।

واجب آمد نسبت اندر دین نخست
کار بے نسبت نمے آید درست

अनुवाद- धर्म के लिए पहले अनुकूलता होनी आवश्यक है अनुकूलता के बिना काम ठीक नहीं बैठता।

آن سعیدے کش ابوبکر است نام
نسبتے مے داشت با خیرالانام

अनुवाद- वह नेक इन्सान जिसका नाम अबू बक्र है वह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ एक निस्बत (अर्थात् आन्तरिक संबंध) रखता था।

زیں نشد محتاج تفتیش دراز
جان او بشناخت روئے پاک باز

अनुवाद- इस कारण वह किसी लम्बी छान-बीन का मुहताज नहीं हुआ। उसकी जान ने एक मुकद्दस के चेहरे को पहचान लिया।

ہست فرقے در نظرہا اے سعید!
آنچہ ہارون دید آن قاروں ندید

अनुवाद- हे नेक इन्सान! नज़र-नज़र में अन्तर होता है जो हारून ने देख लिया वह क़ारून न देख सका।

بودہارون پاک و ایں کِرمے پلید
کے بماند با یزیدے بایزید

अनुवाद- हारून एक पवित्र इन्सान था और क़ारून एक गन्दा कीड़ा बायज़ीद यज़ीद से किस प्रकार बराबर हो सकता है।

گرنباشد نسبتے درجائے گاہ
ظلمتے در ہر قدم گیرد براہ

अनुवाद- यदि किसी को अभीष्ट मुक़ाम का पता न हो तो वह हर क़दम पर ठोकरें खाता है।

آن یکے رامہ عیان پیشِ نظر
دیگرے را ابر کردہ کور و کر

अनुवाद- एक को चांद साफ़ दिखाई देता है और दूसरे को बादल ने अँधा और बुरा कर रखा है।

آن نشستہ بانگارِ دل رُبا
این ز کوری ہا در اِنکار و اِبا

अनुवाद- एक तो दिल को उचक ले जाने वाला प्रियतम के साथ बैठा है और दूसरा अंधेपन के कारण विरोध और इन्कार में ग्रस्त है।

مہ نمے آید نظر در وقتِ ابر
ہمچنین صدّیق در چشمان گبر

अनुवाद- चांद बादल के समय नज़र नहीं आया करता। इसी प्रकार सिद्दीक़ भी काफ़िर की आंख को दिखाई नहीं देता।

اے برادر از تامل کن تلاش
ہان مرد چوں تو سنے آہستہ باش

अनुवाद- हे भाई सब्र और सुविधा से तलाश में लगा रह, घोड़े की तरह न दौड़ धीरे चल।

اے پئے تکفیر ما بستہ کمر
خانہ ات ویران تو در فکرِ دگر

अनुवाद- हे वह कि जिसने हमें काफ़िर कहने पर कमर कस रखी है तेरा अपना घर तो वीरान है परन्तु तू औरों की चिन्ता में पड़ा हुआ है।

صد ہزاراں کفر در جانت نہان
رو چہ نالی بہر کفر دیگراں

अनुवाद- लाखों कुफ्र तो तेरी अपनी जान के अन्दर छुपे हुए हैं भला तू औरों के कुफ्र पर क्यों रोता है?

خیزد اول خویشتن را کُن درست
نکتہ چیں را چشم می باید نخست

अनुवाद- उठ और पहले स्वयं को ठीक कर। ऐतराज़ करने वाले के लिए पहले देखने वाली आंख होनी चाहिए।

لعنتی گر لعنتے برما کند
او نہ بر ما خویش را رسوا کند

अनुवाद- यदि कोई लानती हम पर लानत करता है तो वह लानत हम पर नहीं पड़ती वह तो स्वयं को अपमानित करता है।

لعنتِ اہل جفا آسان بود
لعنت آن باشد کہ از رحمان بود

अनुवाद- ज़ालिमों की लानत को सहन करना आसान है। असली लानत तो वह है जो ख़ुदा की ओर से आए।

लेखक- ख़ाकसार मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मई 1895 ई.

ज़ियाउल हक़

گر نہ بیند بروز شپرہ چشم
چشمۂ آفتاب را چہ گناہ

पुस्तक ज़ियाउल हक़ के बारे में हमारा यह इरादा था कि 'मिननुर्रहमान' के साथ इसे प्रकाशित करें और उसी के भागों में एक भाग उसको ठहरा दें, किन्तु क्रियात्मक तौर पर हमने कथित पुस्तक की कुछ प्रतियों का प्रकाशित करना इसलिए उचित समझा कि कुछ अज्ञान और पक्षपाती लोग अब तक इस बोधभ्रम में ग्रस्त हैं कि जैसे वह भविष्यवाणी जो आथम के बारे में की गई थी वह ग़लत निकली। तो जितनी ज़ियाउल हक़ की प्रतियां अब हम अपने हाथ से रवाना करते हैं उसके अतिरिक्त किसी के निवेदन पर यह पुस्तक कदापि नहीं भेजी जाएगी, परन्तु इस स्थिति में कि निवेदक मिननुर्रहमान को खरीदने का निवेदन करे। क्योंकि यह पुस्तक उसी पुस्तक का एक भाग बनाया गया है और **मिननुर्रहमान पुस्तक** इन्शाअल्लाह दिसम्बर 1895 ई. तक छप जाएगी। तब इस के निकलने के समय यह पुस्तक भी उसका एक भाग समझ कर प्रकाशित की जाएगी। क्रियात्मक तौर पर हम ये कुछ प्रतियां जो पचास से अधिक नहीं केवल इस उद्देश्य से प्रकाशित करते हैं ताकि आथम के मुकद्दम: में उन लोगों को जो कहते हैं कि भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई अतिशीघ्र उन्हें बोधभ्रम के गढ़े से निकाल लें। क्योंकि हमारे अंधे विरोधी अब तक उस सच्चाई को देख नहीं सके जो भविष्यवाणी में चमक रही है। अत: कुछ दिन हुए हैं कि हम ने 13 सितम्बर 1895 ई. नूर अफ़शां अखबार में तथा 'भारत सुधार' 24 अगस्त 1895 ई. का एक निबंध पढ़ा है जिसमें

अखबार का लेखक यह लिखता है कि एक वर्ष और भी गुज़र गया और अब्दुल्लाह आथम अब तक जीवित मौजूद है। केवल जो लोग ऐसे विचार प्रकाशित करते हैं उन की हालत दो रूप से खाली नहीं। एक तो यह कि शायद अब तक उन्होंने हमारी पुस्तक 'अन्वारुल इस्लाम' को भी नहीं देखा जिसमें इन समस्त भ्रमों का विस्तृत उत्तर मौजूद है और दूसरा यह कि यद्यपि उन्होंने पुस्तक 'अन्वारुल इस्लाम' को देखा हो अपितु दूसरे समस्त विज्ञापनों को देख लिया हो। परन्तु वह पक्षपात जो आँखों को अँधा कर देता और हृदय को अंधकारमय कर देता है उसने देखा हो अभी अनदेखा कर दिया। हाय अफ़सोस इन लोगों की बुद्धि पर उन्होंने तो इन्सान बन कर इन्सानियत को भी दाग़ लगाया। भला इन से कोई पूछे कि हमने कब और किस समय कहा था कि अब्दुल्लाह आथम हमारे निवेदन पर हमारे सामने वह क़सम नहीं खाएगा जिसके शब्द कई बार हमने अपने विज्ञापनों में प्रकाशित किए हैं तब भी वह अवश्य एक वर्ष तक मर जाएगा और जबकि हमने ऐसा कोई विज्ञापन प्रकाशित नहीं किया अपितु उसका वर्ष के अन्दर मृत्यु पा जाना क़सम के साथ प्रतिबंधित रखा था, तो इस स्थिति में तो उसके एक वर्ष तक न मरने के कारण हमारी ही सच्चाई सिद्ध हुई। क्योंकि उसने अपने उस इन्कार से जो सच्चाई की ओर रुजू पर एक स्पष्ट तर्क था खुला-खुला लाभ प्राप्त कर लिया। यह आरोप तो उस समय उचित था कि वह हमारे मुकाबले पर मैदान में उस क़सम को उन शब्दों में खा लेता जो हम ने प्रस्तुत की थी और फिर वर्ष के अन्दर मृत्यु न पाता। हमने तो चार हज़ार रुपया प्रस्तुत करके स्पष्ट तौर पर यह कह दिया था कि आथम साहिब शर्त

का रुपया पहले जमा करा लें और सामान्य जल्से में तीन बार यह क़सम खाएं कि **भविष्यवाणी के दिनों में मैंने इस्लाम की ओर कदापि रुजू नहीं किया और इस्लाम की श्रेष्ठता मेरे हृदय पर कदापि प्रभावी नहीं हुई और यदि मैं झूठ कहता हूं तो हे सामर्थ्यवान ख़ुदा मुझे एक वर्ष तक मृत्यु देकर मेरा झूठ लोगों पर प्रकट कर।** यह लेख था जो हमने न एक बार अपितु कई बार प्रकाशित किया और हम ने एक हज़ार से चार हज़ार तक इनाम की नौबत पहुंचाई और कई बार कह दिया था कि यह मौखिक दावा नहीं। पहले रूपया जमा करा लो फिर क़सम खाओ और यदि हम रुपया दाख़िल न करें और केवल व्यर्थ बात सिद्ध हो तो फिर हमारे झूठे होने के लिए किसी अन्य तर्क की आवश्यकता नहीं। परन्तु कोई हमें समझा दे कि आथम ने इन बातों का क्या उत्तर दिया? क्या वह मैदान में आया? क्या उसने क़सम खा ली? क्या उसने हम से रुपए की मांग की? क्या उसने अपने इस बयान को पुख़्ता सबूत तक पहुँचा दिया कि मैं भविष्यवाणी के दिनों में भयभीत तो अवश्य रहा परन्तु इस्लाम की श्रेष्ठता से नहीं अपितु तीन आक्रमण बन्दूकों और तलवार वालों ने मुझ पर किए जिनमें से पहला आक्रमण शिक्षा प्राप्त सांप का था जिसने अमृतसर से निकाला। आप लोग जानते हैं कि इस इल्हाम का साफ़ यह मतलब था कि केवल इस स्थिति में आथम साहिब पन्द्रह महीने में हाविय: में गिराए जाएँगे कि जब वह सच्चाई की ओर रुजू नहीं करेंगे। और आप लोगों को इस बात का भी इक़रार करना बुद्धि और इन्साफ की दृष्टि से आवश्यक है कि यदि यह बात सच है कि उन्होंने सच्चाई की ओर रुजू किया था तो फिर उसका

अनिवार्य परिणाम यही था कि वह मृत्यु से सुरक्षित रखा जाता क्योंकि यदि तब भी मर जाता तो इसमें क्या सन्देह है कि इस स्थिति में भविष्यवाणी की शर्त झूठी ठहरती अपितु भविष्यवाणी ही झूठी सिद्ध होती। कारण यह कि यह भविष्यवाणी का अर्थ यही चाहता था कि शर्त के पूरे होने की हालत में आथम अवश्य निर्धारित मीआद में जीवित रहे। अब जब कि यह बात तय हो गयी कि भविष्यवाणी केवल मृत्यु की ही खबर नहीं देती थी अपितु दूसरे पहलू से आथम को उसके जीवन की भी ख़ुशख़बरी देती थी और शर्त का पालन करने के समय उसका जीवित रहना ऐसा ही भविष्यवाणी की सच्चाई पर मार्ग-दर्शन करता था जैसा कि इस स्थिति में मार्ग-दर्शन करता कि वह शर्त की पाबन्दी न करने के कारण मृत्यु पा जाता तो यह कैसी हठधर्मी है कि भविष्यवाणी की शर्त की उपेक्षा की जाती है और न ख़ुदा से डरते हैं और न उस अस्तित्व से जो इन्साफ को छोड़ने की हालत में लानत की तरह दामन से चिमट जाती है। महानुभावो! यदि पहले नहीं समझा तो अब समझ लो कि **यह भविष्यवाणी वास्तव में दो पहलू रखती थी** जिसका प्रभाव न केवल मरना था अपितु दूसरे पहलू की दृष्टि से जीवित रहना और मृत्यु से बच जाना भी उसका आवश्यक प्रभाव था। फिर यदि हमारे विरोधियों और जल्द्बाज़ों के हृदयों में इन्साफ होता तो केवल मृत्यु न होने पर सियापा न किया जाता अपितु शर्त के अर्थ को समीक्षायोग्य बात ठहराते। अर्थात् यह बात कि आथम ने सच्चाई की ओर रुजू किया या नहीं। फिर यदि देखते कि उसकी उन हालतों से जो क़सम की मांग करने के समय उसने दिखाई रुजू सिद्ध नहीं होता तो जिस प्रकार चाहते शोर मचाते

परन्तु अफ़सोस कि अत्याचारी अशुभचिन्तकों ने इस ओर मुख भी नहीं किया। हे दुनिया के बुद्धिमानो ख़ुदा के लिए भी कुछ बुद्धि व्यय करो और थोड़ा सोचो कि जिस हालत में भविष्यवाणी में शर्त मौजूद थी और आथम ने न केवल अपने आतुरतापूर्ण कार्यों से सिद्ध किया कि भविष्यवाणी के मध्य में ईसाइयत का स्थायित्त्व उससे पृथक हो गया था और इस्लामी श्रेष्ठता ने उसे एक पागल के समान बना दिया था अपितु उसने अपनी जीभ से भी इकरार किया जो नूर अफ़्शां में छप गया कि मैं भविष्यवाणी के मध्य भयभीत रहा। परन्तु न इस्लाम से अपितु इसलिए कि मुझ पर निरन्तर तीन आक्रमण हुए। अर्थात् अमृतसर, लुधियाना और फ़ीरोज़पुर में। परन्तु वह उन आक्रमणों को सिद्ध न कर सका अपितु मार्टिन क्लार्क इत्यादि ने नालिश के लिए उसे बहुत उकसाया और बहुत ही ज़ोर लगाया जिसे उसने साफ़ इन्कार कर दिया और स्वयं को मय्यत (शव) की तरह बना लिया। यदि वह सच्चा था तो उसमें सच्चाई का जोश अवश्य होना चाहिए था और यदि अपने लिए नहीं तो अपने धर्म के लिए इस बात का अवश्य सबूत देना उस का दायित्व था कि जिस डर का उसे इक़रार है वह मात्र तीन आक्रमणों के कारण था न कि इस्लामी श्रेष्ठता के कारण। और प्रत्येक कम योग्यता का इन्सान भी समझ सकता है कि उसने अपने इस दावे का सबूत नहीं दिया जो बतौर रोक उसकी ओर से प्रस्तुत हुआ था। अपितु तीन आक्रमणों का भय एक बिना सबूत बनावट और व्यर्थ रोक थी जो वास्तव में भय को छुपाने के लिए प्रस्तुत की गई थी। यदि वह सच्चा होता तो अवश्य नालिश करके उसे सिद्ध करता या किसी अन्य उपाय से इस घटना को सबूत तक

पहुंचाता। तो जबकि उसने भय का इक़रार तो किया परन्तु उन कारणों को सिद्ध न कर सका जो भय की बुनियाद ठहराए थे। तो आवश्यक तौर पर इस भय को भविष्यवाणी की श्रेष्ठता तथा इस्लाम के रोब की ओर सम्बद्ध करना पड़ा। इस स्थिति में हमें आवश्यक नहीं था कि कोई इनामी विज्ञापन देते या क़सम के लिए उसे विवश करते। क्योंकि इन प्रसंगों ने जो उसने स्वयं ही अपने कथनों, कार्यों तथा गतिविधियों से प्रकट किए थे इस बात को भली-भांति सिद्ध कर दिया था कि वह अवश्य इस्लामी श्रेष्ठता से भयभीत रहा और पवित्र क़ुर्आन तथा ईसाइयों की पुस्तकों के अनुसार रुजू के लिए इतनी बात पर्याप्त थी कि उसके दिल ने इस्लामी श्रेष्ठता को स्वीकार कर लिया परन्तु हमने केवल इस प्रसांगिक सबूत को पर्याप्त न समझा अपितु निरन्तर चार विज्ञापन इनाम की बड़ी राशि सहित जारी किए और उनमें लिखा कि वे प्रसंग जो तुम ने स्वयं ही अपने कर्मों, कथनों एवं गतिविधियों से पैदा किए तुम्हें इस बात का दोषी करते हैं कि तुम अवश्य इस्लामी श्रेष्ठता से डर कर उस शर्त को पूरा करने वाले ठहरे जो भविष्यवाणी में दर्ज थी। फिर यदि तुम से बहुत ही नर्मी करें और कल्पना के तौर पर प्रमाणित बात को संदिग्ध मान लें तब भी उस सन्देह का निवारण करना जो तुमने अपने हाथों से स्वयं पैदा किया इन्साफ और कानून की दृष्टि से तुम्हारा दायित्व है। तो इस का निर्णय यों है कि यदि वह भय जिस का तुम्हें स्वयं इक़रार है इस्लाम की श्रेष्ठता से नहीं था अपितु किसी अन्य कारण से था तो तुम क़सम खा जाओ और उस क़सम पर तुम्हें चार हज़ार रुपया नक़द मिलेगा और एक वर्ष गुज़रने के बाद यदि तुम बच गए तो वह सब रुपया तुम्हारा ही हो जाएगा

परन्तु उसने क़सम कदापि नहीं खाई। मैंने उसे उसके ख़ुदा की भी क़सम दी परन्तु सच की धाक हृदय पर कुछ ऐसी बैठ गई थी कि इस ओर मुंह करना भी उसे मृत्यु के समान था। मैंने उस पर यह भी सिद्ध कर दिया कि ईसाई धर्म में किसी विवाद का फैसला करने के लिए क़सम खाना मना नहीं अपितु आवश्यक है परन्तु आथम* ने तनिक ध्यान न दिया। अब ईमान की दृष्टि से विचार करो कि यह समीक्षायोग्य बात जो सच्ची राय व्यक्त करने का आधार था किस के पक्ष में फैसला हुआ और कौन भाग गया।

हे विरोधी लोगो! क्या कोई तुम में से सोचने वाला नहीं, क्या एक भी नहीं? क्या किसी को भी ख़ुदा तआला का भय नहीं, क्या कोई भी तुम में से ऐसा नहीं कि जो सीधे हृदय से इस घटना पर विचार करे इतना झूठ बांधना क्यों है, क्यों दिलों पर ऐसे पर्दे हैं जो सीधी बात समझ में नहीं आती। इस बात को कहते हुए कि भविष्यवाणी ग़लत निकली क्यों तुम्हें ख़ुदा का भय नहीं पकड़ता, क्यों तुम्हारा दिल नहीं कांप जाता? क्या तुम इन्सान हो या सर्वथा विकृत हो गए? वे आंखें कहां गई जो सच को देखती हैं वे दिल किधर चले गए जो सच्चाई को तुरन्त समझ लेते हैं इस से बढ़कर कोई बेईमानी नहीं कि जो सच्ची बात को अकारण झूठ बनाया जाए और न इस से अधिक बुरी नीचता है कि झूठ पर अकारण हठ की जाए। अब कौन से तर्क शेष हैं जो हम तुम्हारे पास वर्णन करें तथा

---

*आथम ने क़सम खाकर इस सन्देह का निवारण न किया जो डरते रहने के इक़रार से उसके बारे में जम गया था अपितु क़सम खाने से कठोरतापूर्वक इन्कार करके एक अन्य सन्देह अपने ऊपर स्थापित कर लिया। इसी से।

सबूत में कौन सी कमी रह गई है कि वह कमी दूर की जाए। हे ख़ुदा ये कैसे अंधे हैं कि इस बात को मुख पर लाने के समय कि भविष्यवाणी ग़लत निकली भविष्यवाणी की शर्त को भूल जाते हैं। **हे ख़ुदा यह कैसी बेईमानी और नीचता है** कि हमें अकारण बार-बार दु:ख दिया जाता है और कोई भला आदमी आथम को जाकर नहीं पूछता कि तुम **इस आवश्यक क़सम से क्यों इन्कार कर गए और क्यों ईसाई धर्म पर सियाही मल दी** और क्यों ऐसी क़सम न खाई जो बुद्धि, न्याय और कानून के अनुसार अत्यावश्यक थी और तुम पर अनिवार्य हो चुकी थी।

हे लोगो इतनी अतिशयोक्ति से रुक जाओ और डरो क्योंकि वह अस्तित्व सच है जिस को तुम भूलते हो और वह पवित्र हस्ती सच है जिस की इस पक्षपात में तुम्हें कुछ भी परवाह नहीं। उस से डरो क्योंकि कोई व्यर्थ बात नहीं जिस का हिसाब नहीं लिया जाएगा और मुझे उसी की क़सम है जिसके हाथ में मेरी जान है कि यदि आथम **अब भी क़सम खाना चाहे** और उन्हीं शब्दों के साथ जो मैं प्रस्तुत करता हूं एक सभा में मेरे सामने तीन बार क़सम खाए और हम आमीन कहें तो मैं उसी समय चार हज़ार रुपया उसे दूँगा। यदि क़सम की तिथि से एक वर्ष तक जीवित बचा रहा तो **वह रुपया उसका होगा।** और फिर इसके बाद ये समस्त क़ौमें मुझे जो दण्ड चाहे दें। यदि मुझे तलवार से टुकड़े-टुकड़े करें तो मैं बहाना नहीं करूंगा और **यदि संसार के दण्डों में से मुझे वह दण्ड दें जो कठोरतम दण्ड है** तो मैं इन्कार नहीं करूंगा और स्वयं मेरे लिए इस से अधिक

कोई बदनामी नहीं होगी कि मैं उनकी क़सम के बाद जिसका मेरे ही इल्हाम पर आधार है झूठा निकलूँ।

अत: हे झूठ बोलने वाले लोगो! नीचता के षड्यंत्रों को छोड़ दो और **किसी प्रकार आथम साहिब को इस बात पर सहमत करो ताकि ईमानदारों के पक्ष में** वह फैसला हो जाए जो हमेशा ख़ुदा के नियमानुसार हुआ करता है और यदि केवल गालियाँ देना उद्देश्य है तो हम तुम्हारा मुंह नहीं पकड़ सकते और न इस से कुछ मतलब है क्योंकि **हमेशा से अल्लाह की यही सुन्नत है कि हमेशा नीच और दुष्प्रकृति वाले लोग सच्चों को गालियाँ** दिया करते हैं और हर ओर से दु:ख दिया जाता है और अन्त में अंजाम उनके लिए होता है।

मैं आज तुम में प्रकट नहीं हुआ अपितु सोलह वर्ष से सच की दावत कर रहा हूं। तुम्हें यह भी समझ नहीं कि झूठ गढ़ने वाला शीघ्र नष्ट हो जाता है और ख़ुदा पर झूठ बोलने वाला झाग के समान मिटा दिया जाता है। जिन को लोग इस सदी के लिए सच्चे मुजद्दिद कहते थे वह बहुत समय हुआ कि मर गए* और जो उनकी दृष्टि में झूठा है वह अब तक सदी के बारह वर्ष गुज़रने पर भी जीवित है। अत: हे मुसलमान विरोधियो! **जो स्वयं को मुसलमान समझते हो अपने प्राणों पर दया करो क्योंकि** यह इस्लाम नहीं है जो तुम से

✴नोट - शेख़ मुहम्मद हुसैन बटालवी ने नवाब सिद्दीक हसन खां को चौदहवीं सदी का मुजद्दिद ठहराया था। वह सदी के आते ही इस संसार से गुज़र गए और कुछ मुल्लाओं ने मौलवी अब्दुल हयी लखनवी को इस सदी का मुजद्दिद समझा था। उन्होंने भी पहले ही मृत्यु पाकर अपने ऐसे दोस्तों को शर्मिन्दा किया। इसी से।

प्रकट हो रहा है। नई सदी ने तुम्हें एक मुजद्दिद की हदीस स्मरण कराई। **तुम ने उसकी कुछ भी परवाह नहीं की। चन्द्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण ने तुम्हें महदी के आने की ख़ुशख़बरी दी** परन्तु तुमने उसे भी एक व्यर्थ बात की तरह टाल दिया **समस्त बुज़ुर्गों की प्रतिभाएं और कश्फ़ मसीह मौऊद** के लिए एक सर्वसम्मत कथन की तरह **चौदहवीं सदी तक तुम ने सुन लिए।** परन्तु तुम ने उसे भी रद्द कर दिया। **क़ुर्आन** को छोड़ा और उन हदीसों को भी त्याग दिया जो क़ुर्आन के अनुसार हैं परन्तु स्मरण रखो कि तुम **झूठे हो।** अवश्य था कि तुम इस **अन्तिम सत्यनिष्ठ के झुठलाने वाले होते,** क्योंकि जो कुछ उस पवित्र नबी ने तुम्हारे बारे में फ़रमाया था अवश्य था कि वह सब पूर्ण हो।

कुछ लोग अत्यन्त अनभिज्ञता से कहा करते हैं कि इस प्रकार से भविष्यवाणी के पूर्ण होने में लाभ क्या निकला और सत्य के अभिलाषियों को क्या लाभ प्राप्त हुआ। यदि ये बुद्धिमान हैं तो इन्हें उन समस्त भविष्यवाणियों को दृष्टि के सामने ले आना चाहिए जो ख़ुदा के पवित्र नबियों के माध्यम से पूरी हुईं ताकि ज्ञात हो कि भविष्यवाणियों में ख़ुदा तआला का एक विशेष उद्देश्य नहीं होता अपितु किसी समय क़ुदरत का प्रदर्शन दृष्टिगत होता है और किसी समय उन ज्ञानों एवं रहस्यों का प्रकट करना ख़ुदा का उद्देश्य होता है जो भविष्यवाणियों के संबंध में है जिन्हें सामान्य जन नहीं जानते और कभी एक बारीक भविष्यवाणी लोगों की परीक्षा के लिए होती है ताकि ख़ुदा तआला उन्हें दिखाए कि उनकी अक़्लें कहाँ तक हैं। हम लिख चुके हैं कि हदीस-ए-नबवी की दृष्टि से इस भविष्यवाणी

में टेढ़े दिल वाले लोगों की परीक्षा भी अभीष्ट थी। इसलिए बारीक तौर पर पूरी हुई। परन्तु इसकी और भी आवश्यक बातें हैं जो बाद में प्रकट होंगी। जैसा कि कश्फ़ साक़ की भविष्यवाणी इस की ओर संकेत करती है।

लेखक

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अफ़ल्लाहु अन्हु

क़ादियान ज़िला-गुरदासपुर

★ ★ ★

अब्दुल हक़ गज़नवी के मुबाहल: का शेष

अब्दुल हक़ गज़नवी ने अपने बेहूद: विज्ञापन में मुबाहल: में विजयी होने का बहुत सोच-विचार के बाद यह बहाना निकाला था कि भाई के मरने से उसकी पत्नी मेरे क़ब्ज़े में आए और यह भी संकेत किया था कि भविष्य में लड़का पैदा होने की आशा है। इसके उत्तर में हमने अपनी पुस्तक अन्वारुल इस्लाम में लिख दिया था कि भाई का मरना और उसकी कमज़ोर विधवा को निकाल में लाना कोई इच्छा प्राप्ति की बात नहीं अपितु उसकी चर्चा करना ही शर्म की बात है। वह कमज़ोर जो अपनी जवानी का अधिकांश भाग खा चुकी थी उसे निकाह में लाकर तो अकारण अब्दुल हक़ ने रोटी का खर्च अपने गले डाल लिया। अब मालूम हुआ होगा कि ऐसे बेहुद: निकाह से दु:ख ख़रीदा या प्रसन्नता हुई। रहा लड़का पैदा होना इस का अब्दुल हक़ ने अब तक कोई विज्ञापन नहीं दिया। शायद वह पेट के अन्दर ही गम हो गया या क़ुर्आन की आयत के अनुसार लड़की पैदा हुई आर मुंह काला हो गया। परन्तु हमें ख़ुदा तआला ने अब्दुल हक़ के शेखी मारने के उत्तर में ख़ुशख़बरी दी थी कि तुझे एक लड़का दिया जाएगा जैसा कि हम उसी पुस्तक अन्वारुल इस्लाम में इस ख़ुशख़बरी को प्रकाशित भी कर चुके हैं तो अल्हम्दोलिल्लाह वलमिन्नत कि इस इल्हाम के अनुसार 20 जीकऊद 1312 हि. तदनुसार 24 मई 1895 ई. मेरे घर में लड़का पैदा हुआ जिस का नाम शरीफ़ अहमद रखा गया।

والسلام علیٰ من اتبع الهدیٰ

लेखक - ख़ाकसार ग़ुलाम अहमद उफ़िआअन्हु